

विचार बिन्दु

केवल आत्मज्ञान ही हृदयात्मा को सच्चा आनंद प्रदान करता है। -रामतीर्थ

बीते वर्ष का हिंदी साहित्य परिदृश्य: कुछ नोट्स

एक परंपरा-सी बन गई है कि बीते साल के आखिर में या आते साल के प्रारम्भ में उपलब्धियों और आकांक्षाओं का आकलन किया जाए। मेरा संबंध क्वाँकि साहित्य से है, मुझे भी यह उचित लग रहा है कि बीते बरस में (और उससे थोड़ा पहले भी) हमारे हिंदी साहित्य का हाल-चाल कैसा रहा, इसकी पड़ताल करूँ। अब जब मैं पीछे की तरफ मुड़ कर देखा हूँ तो पता हूँ कि हिंदी में लिखा खूब जा रहा है। पहले से ज्यादा लिखा जा रहा है। पहले से ज्यादा में इसलिए कह रहा हूँ कि हमारे यहाँ शिक्षा का प्रसार हुआ है और उसी के साथ सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने की वजह से अपने लिखे को औरों के सामने लाना, उस पर उनकी सराहना पाना और समाज में अपने लिए एक विशिष्टता अर्जित करना अधिक सुगम हुआ है। पहले जहाँ हमें अपने लिखे को दूसरों के सामने लाने के लिए किसी संपादक या प्रकाशक की सहमति की ज़रूरत होती थी, आज उस भूमिका में हम सब स्वतः आ गए हैं। इस कारण जो भी लिखा जा रहा है वह कम से कम सोशल मीडिया के माध्यम से तो सबके सामने आ ही रहा है, और जो लोग अपने इस लेखन काम को अधिक गंभीरता से लेते हैं वे बाकायदा लेखक के रूप में प्रतिष्ठित भी हुए हैं। आज हमारे आस-पास ऐसे अनेक रचनाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन की शुरुआत सोशल मीडिया से की और यहीं लिख-लिखकर वे न केवल अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवा सके, उनके लिए एक बड़ा पाठक वर्ग भी तैयार कर सके।

जो लोग सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रहना चाहते हैं आज उनके लिए भी अपने लिखे को प्रकाशित करवाने के अवसर बहुत बढ़े हैं। इधर कुछ बरसों से हमारे प्रकाशन जगत में एक नई रीत चल निकली है, जिसे मैं प्रकाशन की स्वतंत्रतापो योजना कहता हूँ। आज ऐसे अनेक प्रतिष्ठान बाजार में आ गए हैं जो आपसे पैसा लेकर आपको किताब छापकर दे देते हैं। किताब की गुणवत्ता को परखने की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं होती है, इसलिए पहले प्रकाशक नाम की जो बाधा किताब छपवाने में हुआ करती थी, अब वह भी हट गई है। फलतः प्रकाशित होने वाली किताबों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है। निश्चय ही इस कारण खूब सारा अपरिपक्व लेखन भी सामने आ रहा है, लेकिन फिलहाल मैं केवल संख्या की बात कर रहा हूँ इसलिए इस चर्चा को बाद के लिए बचा कर रख रहा हूँ।

लेखन की जहाँ तक बात है, हिंदी में कविताएँ सबसे अधिक लिखी जाती हैं। कविता को लेकर अलग-अलग लोगों का अलग-अलग नज़रिया है। छंद और छंद विहीनता की बात छोड़ भी दें तो जहाँ बहुत सारे लोग सपाट बयानी को कविता मानने से इंकार करते हैं, वहीं अधिसंख्य नए रचनाकार गद्य की पंक्तियों को तोड़कर लिख देने को ही कविता मान लेते हैं। उनमें से बहुत सारे अपने सोच और शिल्प को बदल कर गंभीर और बेहतर कवि भी बनते हैं, और बहुत सारे आम मुग्धता और सोशल मीडिया की लाइक्स से संतुष्ट रह कर उसी लीक पर चलते रहते हैं। वैसे ऐसा केवल कविता के मामले में ही नहीं अन्य बहुत सारी विधाओं के मामले में भी हो रहा है। अपनी देखी किसी गद्य को कहानी का नाम दे देना या कुछ भी लिखे को व्यंग्य का नाम दे देना बहुत आम है। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि हमारे उत्साही रचनाकारों ने कविता के बाद सर्वाधिक अन्याय व्यंग्य के साथ किया है। इधर गद्य की दुनिया में आजकल सर्वाधिक लेखन कथेतर में हो रहा है। इस बात पर बहुत सारी चर्चाएँ भी हुई हैं कि आज का पाठक कथेतर पढ़ना और लेखक कथेतर लिखना क्यों पसंद करते हैं। सर्वाधिक रेखांकित करने योग्य नवाचार भी कथेतर में ही हो रहे हैं और बहुत सारे एकदम नए लेखक अपने लेखन की ताज़गी से इसी विधा को समृद्ध कर रहे हैं।

जब इतना सारा लिखा जा रहा है तो अपेक्षा यही होती है कि इस लिखे पर चर्चा भी हो रही होगी। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है। नए लिखे जा रहे पर ज्यादा से ज्यादा लोकार्पण आयोजनों में थोड़ी बात होती है, हालाँकि वह बात औपचारिक और अवसरानुरूप प्रशंसात्मक ही होती है। प्रकाशनों में पुस्तक समीक्षा की जगह सिफ्ट-सिफ्टके लगभग अदृश्य ही हो गई हैं और दूसरी बात यह भी कि अपने समीक्षकर्म को गंभीरता से लेने वाले समीक्षकों की संख्या भी निरंतर घटती जा रही है।

लेखकीय आयोजन के नाम पर या तो लोकार्पण समारोह होते हैं या फिर कवि गोष्ठियाँ। छोटे कस्बों और शहरों में तो आयोजन में सम्मानजनक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी कवि गोष्ठी साथ में रखने की मज़बूरी होती है। अब बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं।

बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं। अधिकांश आयोजन उत्सव धर्मिता की परिणति होते हैं। इधर जबसे जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल व्यावसायिक रूप से सफल हुआ है, देश भर में लिटरेचर फेस्टिवल्स की लाइन लगा गई है। हमारे अपने प्रदेश में भी अनेक लिटरेचर फेस्टिवल होते हैं और प्रायः वे सभी जेएलएफ के पैटर्न पर होते हैं। भले ही उनमें बहुत ज्यादा सार्थक और गम्भीर विमर्श न होता हो, यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि इनकी वजह से एक बड़ा समूह साहित्य और विचार के संर्क में आता है।

इधर हिंदी में सम्मान और पुरस्कारों की तो जैसे बाढ़ ही आ गई है। सम्मान तो खैर अब इतना सरल और सरसा हो गया है कि बिना हर्ष फिटकरी के हो जाता है। ऑनलाइन सम्मान का तो कहना ही क्या! अगर ऑफलाइन भी हो तो चार सौ रुपये में किसी का भी सम्मान किया जा सकता है, कर दिया जाता है। एक मानपत्र, एक शॉल, एक नारियल और एक माला। और क्या चाहिए? पुरस्कारों का हाल यह है कि पचास लोगों से पंजीकरण राशि लेकर दस लोगों को पुरस्कृत करने वाली अनेक दुकानें खुल गई हैं जो बाकायदा विज्ञापन करके पुरस्कार के लिए आवेदन मंगवाती हैं - और लोग आवेदन करके पुरस्कृत होते भी हैं। बैशक ऐसे भी अनेक पुरस्कार हैं जिन्होंने अभी भी अपनी साख बचा रखी है, लेकिन छद्म पुरस्कारों की भीड़ ने उनकी गरिमा को भी आहत किया है।

यों तो पहले भी साल के आखिर में वर्ष भर के लेखन का लेखा-जोखा अखबारों वगैरह में होता था, इधर कुछ वर्षों से अलग-अलग संस्थान साल भर की दस-बीस बेहतरीन किताबों की सूची जारी करने लगे हैं। वैसे तो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन इन सूचियों को देखकर यह लगता है कि सारी अच्छी किताबें राजधानी के दो-चार प्रकाशकों के यहाँ से ही आ रही हैं। यथायथ यह नहीं है। दूरस्थ शहरों और कस्बों के छोटे और लगभग अनाम प्रकाशकों के यहाँ से भी अच्छी किताबें आती हैं लेकिन बड़े प्रकाशनों में छपने वाले लेखक उनका नोटिस लेना भी ज़रूरी नहीं समझते। हो सकता है यह उनकी भी सीमा हो जो ये सूचियाँ बनाते हैं। लेकिन अगर अनुमानतः दो सौ प्रकाशकों के यहाँ से हर साल छपने वाली लगभग दो हजार किताबों में से दो-तीन प्रकाशन गृहों की बीसेक किताबें ही चर्चा में आती हैं तो कहीं न कहीं कोई गड़बड़ तो है, और इसे ठीक किया जाना ज़रूरी है। एक तरीका यह भी हो सकता है कि जो भी गंभीर पाठक हैं वे अपनी पढ़ी बेहतरीन किताबों की चर्चा किया करें ताकि सबका ध्यान उनकी तरफ जाए।

साहित्यकारों की दुनिया में विवाद न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। सोशल मीडिया के प्रसार वाले इस समय में विवाद की आग में दो चार लकड़ियाँ वे भी डाल देते हैं जिन्हें उस विवाद का एबीसीडी भी पता नहीं होता है। ज्यादातर विवाद ऐसे होते हैं जिनके होने का कोई औचित्य नहीं होता। मैं तो मानता हूँ कि ये विवाद हमारी नीरस ज़िंदगी को थोड़ा रोचक और रोमांचक बना देते हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं।

लेखन की बात करते हुए इस बात की चर्चा करना बहुत ज़रूरी है कि भारत सरकार ने हाल में बुक पोस्ट की रियायती व्यवस्था को खत्म करके पुस्तकों-पत्रिकाओं के प्रेषण पर बहुत कठोर आघात किया है। जब साठ-सत्तर रुपये में भेजी जाने वाली सामग्री के लिए दो सौ सोलह रुपये खर्च करने पड़ेंगे तो कल्पना की जा सकती है कि हमारे प्रकाशन जगत पर और साहित्यानुरागी पाठकों पर इसका क्या और कैसा प्रभाव पड़ेगा। सरकार का अकेला यह कदम हमारे पढ़ने-लिखने को बहुत गहरा आघात पहुंचाएगा। जहाँ तक राजस्थान की बात है, यहाँ सरकार बदलने के कारण पिछली सरकार द्वारा गठित विभिन्न भाषाओं की अकादमियाँ अब मृत प्रायः हैं। जो थोड़े बहुत पुरस्कार व अनुदान-सहायता लेखकों को मिलते थे वे सब बंद हैं। नई सरकार की प्राथमिकता में अभी अकादमियों के अध्यक्ष बनाने का काम नहीं है। वैसे भी रणनीति की दृष्टि से सरकारों को यही सुरक्षित लगता है कि बर के इस छठे में जाते-जाते ही हाथ डाला जाए। सो अभी अकादमियाँ केवल नाम भर को हैं। सेहत साहित्यिक संस्थाओं की भी बहुत अच्छी नहीं है। इसलिए जो हो रहा है वह लेखकों के व्यक्तिगत प्रयासों से ही हो रहा है।

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



डॉ. रामावातर शर्मा

आनुवंशिकता एक जटिल विषय है और इसका आधार जीन स्वयं में एक जटिल संरचना होती है जो कि डीएनए नामक एक अतिसूक्ष्म प्रोटीन यौगिक में स्थिति होती है। जीन को हिंदी में वंशाणु, पित्राणु या जनुक कहा जाता है। यह डीएनए का एक हिस्सा होती है जिसके द्वारा माता-पिता के कई गुण या उनका कोई युगल उनकी संतानों में भेजा जाता है। सामान्य उदाहरणों के रूप में बालों की रंग, आंखों की बनावट या रंग, हाथ पैरों की बनावट या आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखा जाते हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य करता है। हमारे शरीर में धागनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आसस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थिति होती है। क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालांकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताडित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक यौन जन्म से लेकर कोई 35 वर्ष की उम्र तक एक सक्रिय मनुष्य किसी जानलेवा दीर्घकालिक बीमारी का

शिकार साधारणतया नहीं होता है। यही कारण है कि इस प्राकृतिक प्रक्रिया में वे जीन जो हृदय रोग, एथेरोस्क्लेरोसिस, अल्जाइमर रोग, डायबिटीज तथा कैंसर जैसे रोगों के लिए जिम्मेदार हो सकती हैं वे मनुष्य शरीर से हटती नहीं हैं और प्रजनन काल के बाद की उम्र में ये रोग शरीर में विकसित हो सकते हैं। कुछ जीन ऐसे होती हैं जो कुछ लोगों को शतायु तक ले जाती हैं जिन्हें दीर्घायु जीनोटाइप कहा जाता है परंतु ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। इसके विकल्प में हमारे पास फिनोटाइप है जिसमें हम अपनी जीवनशैली द्वारा वह बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो इन चंद लोगों को जीनोटाइप द्वारा प्राप्त हुआ है। याद रखिए, प्रकृति के नियमों के अनुसार मां बाप बनने की उम्र के बाद आपको अपना जीवन स्वयं ही संभालना होता है। एक विशिष्ट जीन होती है जिसे आपो ई कहा जाता है। इसके तीन रूप और होते हैं जिनको ई2, ई3 और ई4 कहा जाता है। आपो ई का मुख्य कार्य कोलेस्ट्रॉल के लिबर में निर्माण और फिर कोशिकाओं तक परिवहन होता है। आपो ई ज्यादातर लोगों में ई3/ई3 का युगल होता है। अब

यदि किसी व्यक्ति के जीन युगल में एक या फिर दोनों ई4 घटक हों तो इस व्यक्ति में अल्जाइमर रोग होने की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं। इसके विपरीत यदि ई2/ ई2 घटक हों तो डिमेंशिया (मनोग्रंथ) की संभावनाएं नाग्य-सी हो जाती हैं और दीर्घायु होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। दूसरी तरफ ई4 की दोनों प्रतिलिपि होने पर व्यक्ति के अल्पायु होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसके अलावा दो अन्य जीन भी होती हैं जिनके धारक हृदय रोग से प्रभावित नहीं होते हैं। परंतु ऐसा नहीं है कि हमारी उम्र सिर्फ जीनोटाइप ही निर्धारित करते हैं। हमारे पास जीवनशैली के रूप में एक बड़ा विकल्प है जिसके द्वारा हम जीन की अभिव्यक्ति को बदल सकते हैं और अधिकतर अवसरों में सफलपूर्वक सामान्य और दीर्घकालिक जीवन जी सकते हैं। इस क्रिया को फिनोटाइप कहा जाता है जिसमें जीन कैसे कार्य करे इस बात का निर्णय लिया जाता है। फोक्सो 3 नामक एक सर्वव्यापी जीन होती है जिसके द्वारा किसी अन्य जीन की अभिव्यक्ति को मुखर या मंद किया जा सकता।

जीवनशैली द्वारा फोक्सो 3 को सक्रिय करने पर यह शरीर की अन्य जीन को पुनर्निर्माण, परमत्त, कोशिकाओं की साफ सफाई और उन्हें स्वस्थ रखने के कार्यों के प्रति उत्साहित करता है। इसके अलावा यह कैंसर के विकास को भी रोकती है। जीवन में शरीर और विचार दोनों में लचीलापन रखिए। गतिमान रहिए। मांसपेशियों की शक्ति को बनाए रखने के लिए हल्का व्यायाम कीजिए। पैदल चलिए। भोजन मुख्यतया वनस्पति आधारित, सी वीड या मछली के कुछ उपयोग वाला होना चाहिए। कुछ न कुछ अंकुरित या फिर माइक्रोग्रीन का सप्ताह में दो तीन दिन उपयोग कीजिए। हरे पत्तों का साग और मानसिक उत्तेजना से बचाव जैसे सामान्य उपाय बड़ा लाभ प्रदान करते हैं। सूर्योदय और सूर्यास्त के साथ भोजन को जोड़ना और रोजाना 7-8 घंटे की नींद फोक्सो 3 को क्रियाशील करने में सहायक होती है। अंत में, जीवन आपका है इसलिए इसे कैसे और कितना जीना है इसका निर्णय भी आप को ही करना है।

-डॉ. रामावातर शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

वन प्राणी ने किया बकरी का शिकार

बौली-बामनवास। क्षेत्र के लाखनपुर ग्राम पंचायत गांव में रविवार को प्रातः 11 बजे दिन दहाड़े ही एक वन प्राणी ने बकरी का शिकार करके मौत के घाट उतार दिया। इस दिन दहाड़े बकरी के शिकार करने को लेकर ग्रामीणों में भय व्याप्त हो गया एवं वन प्राणी को आबादी क्षेत्र से दूर भेजने के लिए वन विभाग को सूचित किया। लाखनपुर के ग्रामीणों ने बताया कि रविवार को 11 बजे दिन दहाड़े ही पैंथर ने गांव के पास ही हनुमान माली की बकरी का शिकार करके फाड़ दिया जिससे उसकी मौत हो गई। इस घटना से ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गई। वे अपने जानवरों की सुरक्षा के इंतजाम करने लगे। सूचना पाकर बौली रेंज वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची एवं मौके पर जांच करके वन प्राणी को लकड़बग्घे (गृह) के पगमार्क पाए जाने के लिए की एवं बताया कि शिकार करने वाला वन प्राणी पैंथर नहीं लकड़बग्घा (जरख) था। लाखनपुर गांव अरावली पर्वत श्रृंखला वन क्षेत्र के नजदीकी बसा होने के कारण अक्सर वहां वन्य जीव आसपास आते जाते रहते हैं।

29 ट्रेनें 60 दिनों तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी ठहराव

जोधपुर, (कासं)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल से चलने व गुजरने वाली करीब 28 ट्रेनें अगले 60 दिनों तक सूरत रेलवे स्टेशन पर ठहराव नहीं करेगी। सूरत रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य के तहत एयर कॉन्कोर्स के निर्माण हेतु लिए जा रहे ब्लॉक के कारण इन ट्रेनों का सूरत की जगह उधना रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित किया गया है। जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह के अनुसार सूरत स्टेशन से होकर गुजरने वाली यह ट्रेनें 7 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की बजाय उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने बताया कि किसी भी असुविधा से बचने के लिए यात्री उधना स्टेशन पर इन ट्रेनों के आगमन व प्रस्थान का समय नेशनल ट्रेन इन्क्वायरी सिस्टम (एनटीईएस) अथवा रेलवे वेब साइट पर देख सकते हैं।

ट्रेनें जो सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी ठहराव : ट्रेन 14707, लालगढ़-दादर रणकपुर एक्सप्रेस 7 जनवरी से 3 मार्च, ट्रेन

20944, भगत की कोठी-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक 10 जनवरी से 7 मार्च, ट्रेन 20966, भगत की कोठी-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 11 जनवरी से 1 मार्च, ट्रेन 19056, जोधपुर-वलसाड साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी 5 मार्च तथा ट्रेन 22473, बीकानेर-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 13 जनवरी से 3 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

इसी तरह ट्रेन 16588, बीकानेर-यशवंतपुर एक्सप्रेस 11 जनवरी से 7 जनवरी से 4 मार्च, ट्रेन 14806, बाड़मेर-यशवंतपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च, ट्रेन 19028, जम्मू-वी- बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक एक्सप्रेस 13 जनवरी से 3 मार्च, ट्रेन 21902, बाड़मेर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च व ट्रेन 22932, जैसलमेर बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

■ किसी भी असुविधा से बचने के लिए यात्री उधना स्टेशन पर इन ट्रेनों के आगमन व प्रस्थान का समय नेशनल ट्रेन इन्क्वायरी सिस्टम (एनटीईएस) अथवा रेलवे वेब साइट पर देख सकते हैं।

पुनर्विकास कार्य के कारण ट्रेन 22916, हिसार-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च, ट्रेन 12998, बाड़मेर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च, ट्रेन 22664, जोधपुर-चैन्नई एमोर साप्ताहिक एक्सप्रेस 14 जनवरी से 4 मार्च, ट्रेन 22738, हिसार-सिकंदराबाद डि साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 1 मार्च तथा ट्रेन 22724, श्री गंगा नगर- नांदेड

साप्ताहिक एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी।

इसी प्रकार ट्रेन 07054, लालगढ़-कांचीगुड़ा साप्ताहिक एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च, ट्रेन 14807, जोधपुर-दादर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 7 मार्च, ट्रेन 16507, जोधपुर-बेंगलुरु डि साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च, ट्रेन 16533, जोधपुर- बेंगलुरु साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च, ट्रेन 20943, बांद्रा टर्मिनस-भगत की कोठी साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च, ट्रेन 12997, बांद्रा टर्मिनस-बाड़मेर साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च, ट्रेन 14808, दादर-जोधपुर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च, ट्रेन 16587, यशवंतपुर-बीकानेर साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 2 मार्च व ट्रेन 14708, दादर-लालगढ़ रणकपुर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर रहेगी।

भरतपुर के आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज को संक्रमण से बचाने के लिए परिजनों को खुद लाना पड़ा क्रेडल

भरतपुर, (निस)। मैन पावर की कमी से जूझ रहे आरबीएम अस्पताल में आए दिन मरीज के परिजनों को ही अपने मरीज की चिकित्सा सुविधा के लिए अपना सहयोग देना पड़ जाता है। ऐसा ही नजारा उस वक़्त देखने को मिला जब आग से गंभीर रूप से झुलसने पर एक महिला को इलाज के लिए जिला आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया। जहां आईसीयू वार्ड में वन मरीज के लिए क्रेडल ना होने पर आईसीयू वार्ड के स्टाफ ने मरीज को देखने आए लोगों को ही दूसरी बिल्डिंग में छठवीं मंजिला पर क्रेडल लाने के लिए भेज दिया। हालांकि क्रेडल लाना भी मरीजों के परिजनों के लिए आसान साबित नहीं रहा।

आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज के लिए परिजनों को अस्पताल के दूसरे ब्लॉक में बनी छठी मंजिला के बर्न से में जाना पड़ा जहां लोहे के जाल जिसे क्रेडल कहा जाता है। उसे अपने कंधों पर रखकर छठी मंजिल से नीचे आकर वापस ए ब्लॉक की मंजिल पर लाना पड़ा। जबकि या तो आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में वन मरीजों को क्रेडल की व्यवस्थाएं रखनी थी या फिर अस्पताल के स्टाफ को परिजनों के साथ भेजना चाहिए था। प्राप्त जानकारी के अनुसार नविया मौलव्वा निवासी मीरा शर्मा अद्वैत घर में कड़ाके की सर्दी से बचाव के लिए लकड़ियों में आग लगा कर सेक रही



सीआईसीयू में क्रेडल ना होने पर मरीज के परिजनों को दूसरी बिल्डिंग में छठवीं मंजिला से उतारकर पहली बिल्डिंग के वार्ड में लाना पड़ा क्रेडल।

■ अस्पताल में मैन पावर व मशीन पावर की कमी के चलते आए दिन मरीज के परिजन अपने मरीज को कंधों, व्हील चेयर, ट्रॉली पर खुद ले जाते अक्सर दिखाई देते हैं।

थी। जहां असंतुलित होकर वह जलती लड़कियों में गिर गई। जिसमें महिला गंभीर रूप से झुलस गई।

जिसे परिजनों ने पड़ोसियों की सहायता से इलाज के लिए जिला आरबीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां महिला की गंभीर हालत देख

चिकित्सकों ने उसे आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक में बने सीआईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया। लेकिन वहां वन मरीजों को संक्रमण से बचाने के लिए आवश्यक क्रेडल नहीं होने पर स्टाफ ने मीरा शर्मा के साथ आए परिजन व उसके पड़ोसियों

को दूसरे ब्लॉक की छठवीं मंजिल पर क्रेडल लाने के लिए भेज दिया। जिस पर मरीज के परिजन अपने कंधों पर रखकर क्रेडल को छठवीं मंजिला से उतारकर वापस ए ब्लॉक में लेकर आए। हालांकि मरीज के परिजनों ने इसे लेकर कोई शिकायत नहीं की और खुशी खुशी कंधे पर लटकाकर क्रेडल लेकर पहुंचे। अस्पताल में मैन पावर व मशीन पावर की कमी के चलते आए दिन मरीज के परिजन अपने मरीज को कंधों, व्हील चेयर, ट्रॉली पर खुद ले जाते अक्सर दिखाई देते हैं।

कदम से कदम मिले स्वयं सेवकों के

मकराना, (निस)। डीडवाना कुचामन जिले के ग्राम पंचायत जूसरी ग्राम में रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर पथ संचलन निकाला गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने कदम से कदम मिलाकर पथ संचलन निकाला।

इस दौरान रास्ते में जागह जागह पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। पथ संचलन ग्राम के मुख्य मार्गों से होकर गुजरा जिसमें युवा, बुजुर्ग, बच्चों सहित हर उम्र के स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में शामिल हुए। संचलन में शामिल स्वयंसेवक कतारबद्ध होकर कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे जिनके आगे घोषवादन हो रहा था कार्यक्रम में संघ के मुख्य वक्ता रज कुमार जी ने बौद्धिक विकास व सामाजिक एकता पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत देश का इतिहास बड़ा गौरवमय रहा तथा समाज में जागरूकता का चरित्र हो रहा है, यह पथ संचलन हिंदू समाज में आत्मविश्वास व जागरूकता को बढ़ाने का प्रतीक है।

मुख्य वक्ता ने जीजाबाई के जयंती पर उनके बारे में बताया तथा सभी मातृ शक्ति जीजाबाई के जीवन से कुछ सीखे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री रघुनाराय महाराज श्री 108 श्री बनवारीशरण दास महावाचन रहे।

कार्यक्रम में माननीय खंड संघ चालक महावीर जी उपस्थित रहे। संचलन के स्वागत के लिए ग्रामवासियों ने फूलों की वर्षा तथा रोशनीया बसाई गई और पथ संचलन के मार्ग पर स्वागत द्वार भी बनाए गए

राशिफल
सोमवार 6 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सायं 7:06 तक, परिध योग रात्रि 7:05 तक, वर्षाण करण सायं 6:24 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

पंडित अनिल शर्मा
ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरु-वृष, शुक-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।
आज भद्रा सायं 6:24 से आरम्भ होगा। आज गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, पंचक है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:57 से 11:15 तक, चर 1:50 से 3:08 तक, लाभ-अमृत 3:08 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

मेघ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बलना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद टलना ठीक रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से रहित मिल सकती है। अटके हुए कार्य बहल लेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मकर
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नौकरी/व्यापार व्यक्तियों को उच्चोच्चकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ
घर-परिवार में उत्सव साहो ल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
मानसिक तनाव दूर होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सर्वधर्म मैत्री संघ के कार्यक्रम सराहनीय

अजमेर, (कासं)। सर्वधर्म मैत्रीसंघ का वार्षिक उत्सव राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सरदार इकबाल सिंह लालपुरा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर सिंह ने सर्वधर्म मैत्री संघ के लोगों को जागरूक करने के लिए किए जा रहे कार्यों को सराहना की।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में इस प्रकार के संगठन केवल अजमेर जैसे शहर की शान नहीं है अपितु राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रासंगिक हो गए हैं और कार्यक्रम के माध्यम से शांति व समरसता की प्रासंगिकता स्पष्ट दिखाई देती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सभापति आयुक्त महेशचंद्र शर्मा ने अजमेर की सांस्कृतिक विरासत में मैत्री संघ को एक अनुपम महत्वपूर्ण संस्था बताते हुए इसके कार्यों को महत्वपूर्ण बताया।

संघ के अध्यक्ष प्रकाश जैन ने सामाजिक समरसता की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया तथा वर्तमान में सड़क सुरक्षा माह तथा नशामुक्ति अभियान के अंतर्गत की जा रही गतिविधियों की भी जानकारी दी। निर्मल आश्रम नई दिल्ली से डॉक्टर स्वामी रामेश्वरानंद महाराज ने जीवन के अनुभव साझा किए। राज्य सरकार के अल्पसंख्यक विभाग जयपुर के उपनिदेशक सुशील कुमार द्वारा बैज लगाकर सर्वधर्म मैत्री संघ के मुख्य पदाधिकारियों का अभिनंदन किया गया।

पुष्कर मेड़ता रेल परियोजना का कार्य शुरू

अजमेर/पुष्कर, (कासं)। पुष्कर और मेड़ता रेल लाइन परियोजना के लिए रेल मंत्रालय द्वारा पहले चरण के कार्य के लिए 97 करोड़ रुपये की स्वीकृत प्रदान की है। इसके साथ परियोजना पर कार्य शुरू हो गया है। तीर्थ पुष्कर और मेड़ता रेल को लेकर लंबे समय से मांग की जा रही थी। कैबिनेट मंत्री सुरेश सिंह रावत की मेहनत अब रंग लाई है, योजना ने धरातल पर मूर्त रूप लेना शुरू कर दिया है। परियोजना के तहत पुष्कर और मेड़ता के बीच 51.34 किलोमीटर लंबी रेल लाइन का निर्माण किया जाएगा, इससे दोनों शहरों के बीच यात्रा का अनुभव सरल और सुलभ होगा, साथ ही क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी।

पहले चरण के कार्य हेतु 97 करोड़ रुपये स्वीकृत: रेलवे मंत्रालय ने परियोजना के पहले चरण के लिए 97 करोड़ रुपये की लागत से कार्य प्रारंभ कर

श्री मसानिया भैरव धाम राजगढ़ पर नववर्ष के कैलेंडर का विमोचन

अजमेर (कासं)। श्री मसानिया भैरव धाम राजगढ़ पर रविवारीय मेले में धाम के उपासक चम्पालाल महाराज ने सर्वप्रथम बाबा भैरव व माँ कालिका की विधिवत पूजा अर्चना कर सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की परिक्रमा प्रारम्भ की।

इसी दौरान सुजानगढ़ के कार्यकर्ताओं की टीम द्वारा श्री

श्री मसानिया भैरव धाम राजगढ़ पर रविवारीय मेले का आयोजन हुआ

मसानिया भैरव धाम में मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर महाराज के करकमलों द्वारा व नसीराबाद सदर थानाधिकारी प्रहलाद सहाय की उपस्थिति में नववर्ष के नए कैलेंडर का विमोचन किया गया।

महाराज ने इस कार्यक्रम के दौरान सुजानगढ़ के कार्यकर्ताओं की शुरुआत करते हुए उनके समर्पण और



मसानिया भैरव धाम में नववर्ष के नए कैलेंडर का विमोचन किया।

सेवा भावना की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे समर्पित कार्यकर्ता समाज और धर्म के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में भक्तजन और श्रद्धालु उपस्थित रहे, जिन्होंने महाराज

से आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने पश्चिम चक्की वाले मंदिर पर राजा रानी कल्पवृक्ष की परिक्रमा भी करी। इस अवसर पर कई धार्मिक और सामाजिक विषयों पर चर्चा भी हुई। महाराज ने सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण

स्तंभ की 22वीं वर्षगांठ के कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए धाम के सभी महिला व पुरुष कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। यह आयोजन सभी के लिए प्रेरणादायक और आध्यात्मिक चर्चा से भरपूर रहा।

‘राष्ट्रहित में समर्पित भाव से काम कर रही है मोदी सरकार’

अजमेर, (कासं)। केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री एवं अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी ने रविवार को किशनगढ़ स्थित चाँदनी निवास एवं कार्यालय पर आयोजित जनसुनवाई में क्षेत्रवासियों से मुलाकात की और उनकी समस्याएँ सुनीं। संसदीय क्षेत्र अजमेर और विधानसभा क्षेत्र किशनगढ़ के विभिन्न भागों से आए आमजन एवं कार्यकर्ताओं ने अपनी समस्याओं और सुझावों को व्यक्त किया।

केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने सभी समस्याओं को गंभीरता से सुना और संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यहाँ के नागरिकों का विश्वास एवं सहयोग उन्हें क्षेत्र के विकास और जनसेवा के प्रति और अधिक समर्पित करता है।

अजमेर को मिली नए थाने की सौगात

अजमेर, (कासं)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार की बजट घोषणा में की गई नए थाने की सौगात रविवार को अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र को मिली। विधानसभा अध्यक्ष व अजमेर उत्तर विधायक वासुदेव देवानी ने पुरानी विश्राम स्थली स्थित एडीए भवन में हरिभाऊ उपाध्याय नगर (एचबीयू नगर) थाने का विधिवत उद्घाटन किया, फिलहाल यह जगह अस्थाई होगी, बाद में इसे कोटड़ा स्थायी भवन में निर्माण के बाद शिफ्ट किया जाएगा। एचबीयू नगर थाने के पहले थाना प्रभारी महावीर प्रसाद शर्मा हैं।

इस दौरान अजमेर सभांगीय आयुक्त महेश चंद्र शर्मा, पुलिस उपमहानिरीक्षक ओम प्रकाश, एसपी वंदिता राणा, एडिशनल एसपी हिमांशु

जांगिड़, सीओ रुद्र प्रकाश शर्मा शहीद कई थानों के थाना अधिकारी मौजूद थे। जुलाई में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बजट घोषणा में इस थाने की घोषणा की थी। इससे क्रिश्चियन गंठ थाने का दबाव कम होगा। अजमेर-उत्तर क्षेत्र में कई नवीन कॉलोनियाँ बन रही हैं। जबकि क्षेत्र में चोरी, चैन स्टेचिंग, छेड़छाड़ व अनैतिक गतिविधियाँ सहित अन्य वारदातें होती रहती हैं। ऐसे में इस नए थाने से राहत मिलेगी।

थानाप्रभारी सहित 21 को किया नियुक्त: एसपी वंदिता राणा ने एचबीयू नगर थाने में पुलिस जाब्ता तैनात कर दिया है। थानाप्रभारी के पद पर निरीक्षक महावीर प्रसाद शर्मा को लगाया, वहीं दो सहायक उपनिरीक्षक जयलाल, जगमाल दाहिमा लगाए गए, इनके

सदगुरु बाबा ईसरदास साहिब का शताब्दी वर्सी महोत्सव

अजमेर, (कासं)। अजमेर स्थित ईश्वर मनोहर उदासीन आश्रम में श्री सदगुरु बाबा ईसरदास साहिब की पुण्य शताब्दी महोत्सव के अवसर पर मंगलवार 7 से 13 जनवरी तक विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे।

7 से 11 जनवरी तक श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ व रामलीला का मंचन राष्ट्रभाषा हिन्दी में होगा। 11 व 12 जनवरी को देश भर से आए संत महात्माओं का धर्म संसद व संत दर्शन के साथ 13 जनवरी को यज्ञ अनुष्ठान, संत आर्शावाद, समाधि पूजन, आरती प्रार्थना, पल्लव का आयोजन किया जाएगा।

महंत स्वरूपदास ने बताया कि श्रीराम कथा के लिये मध्यप्रदेश जबलपुर से स्वामी अशोकानन्द व संत मण्डली व रामलीला के लिये उत्तरप्रदेश वृन्दान से श्री करुणामयी रामलीला मण्डल के कलाकार व पंडित 6 जनवरी को दोपहर अजमेर पहुंचेंगे।

संत गौराम ने बताया कि महोत्सव का शुभारंभ 7 जनवरी को प्रातः 11 बजे से कलश व शोभा यात्रा संत महात्माओं की उपस्थिति में अजमेर स्थित श्री हनुमान मन्दिर से प्रारम्भ होकर अजमेरनगर के विभिन्न मार्गों से निकलकर हिलटॉप स्थित ईश्वर मनोहर उदासीन आश्रम पर पहुंचेगी।

सार-समाचार बार एसोसिएशन अध्यक्ष शर्मा का अभिनंदन



मदनगंज-किशनगढ़, (निस)। किशनगढ़ बार एसोसिएशन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष रूपेश शर्मा का अभिनन्दन किया गया। कारकिर्या पीठ मंदिर देवाचार्य डॉ जयकृष्ण देवाचार्य के सानिध्य में नागरीदास कला संस्थान द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में आयोजन में बार अध्यक्ष व जय परशुराम सेना संयोजक एडवोकेट रूपेश शर्मा का सामाजिक सेवा के साथ धार्मिक कार्यों में अठाणी रहकर नशा मुक्ति के लिये अभियान चलाने को लेकर उपरणा ओढ़ाकर स्वागत किया। अध्यक्ष शर्मा ने गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर कला संस्थान के गोविंद पाटोदिया के प्रति आभार व्यक्त किया।

विनोद अध्यक्ष सर्वसमिति से चुने

मेड़ता सिटी (निसं.)। नामदेव टाक क्षत्रिय दर्जा समाज नवयुवक मंडल के तत्वाधान में रविवार को नामदेव भवन में बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी 2 फरवरी को बसंत पंचमी पर्व को लेकर बैठक का आयोजन किया गया वही नामदेव नवयुवक मंडल के चुनाव किए गए जिसमें नामदेव नवयुवक मंडल के संरक्षक नरेंद्र तोलविद्या, सी पी डिडवानिया, मेहेन्द्र टेलर के सानिध्य में चुनाव किए गए जिसमें विनोद रुणवाल को नामदेव नवयुवक मंडल का सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया वही प्रेम प्रकाश रुणवाल को उपाध्यक्ष, विजय तारवाण को सचिव व प्रकाश सर्वां को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष रुणवाल ने कहा कि समाज में नवयुवक मंडल रीड की हड्डी के समान काम करता है। वही समाज के विकास में मुख्य भूमिका में काम करते हैं। रुनवाल ने बताया कि जो नवयुवक मंडल के अध्यक्ष का जो दायित्व मुझे दिया में मैं उस पर कर्तव्य के साथ कार्य करूंगा। वही नवयुवक मंडल की कार्यकारिणी का विस्तार जल्द किया जाएगा। रुनवाल ने बताया आगामी 2 फरवरी को बसंत पंचमी महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष इंडीवाल, मनोज वर्मा, संजय रुणवाल, रवि रुनवाल, प्रकाश तारवाण, योगेश वर्मा, कैलाश तारवाण, पवन रुनवाल, राधेश्याम नेरिया, अशोक नेरिया अर्पित तारवाण सहित समाज के नवयुवक मंडल के सदस्य मौजूद थे।

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

मेड़ता सिटी (निसं.)। मेघवाल विकास सेवा संस्थान के तत्वाधान में रविवार को मेघवाल समाज भवन में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा वहीं सार्वजनिक निर्माण मंत्री मंजू बांधमार, मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरू थे। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री बैरवा ने कहा कि समाज की प्रतिभाओं को हमेशा मौका मिलना चाहिए और उनको आगे लेने के लिए सभी का सहयोग करना चाहिए वहीं मेड़ता विधायक लक्ष्मण राम कलरू ने कहा कि मेघवाल समाज बहुत बड़ा समाज है और राजस्थान ही नहीं पूरे भारत में मेघवाल समाज का वोट बैंक बहुत बड़ा है। समाज के नागरिकों को कहना चाहता हूँ समाज अपना बहुत बड़ा है हमेशा समाज के नागरिकों का साथ जरूरी है वहीं अन्य समाज के नागरिकों को भी अपने साथ रख कर कार्य करने चाहिए। किसी भी समाज के किसी प्रकार की नागरिकों को किसी ओर नजर से नहीं देखना चाहिए हर समाज के नागरिकों को साथ रख कर आगे बढ़ना चाहिए। इस मौके पर प्रदेशाध्यक्ष सुरेश मेघवाल, सुरेश, रिया उपखंड अधिकारी एस के एम, शिव मेघवाल, सीताराम मेघवाल, मेड़ता रोड नगरपालिका अध्यक्ष मेघवाल, कलरू सरपंच अशोक जूरिया, सरपंच रिया श्यामदास अशोक सहित मेघवाल समाज के नागरिक व जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

दिलीप जायेंगे उत्तराखंड

मसूदा (निसं.)। मसूदा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत अंधेरी देवरी में संचालित श्री सीमेंट में कार्यतक राष्ट्रीय कबड्डी निर्माणिक दिलीप टाक 8 जनवरी से 11 जनवरी हरिद्वार उत्तराखंड में आयोजित होने जा रही 50वीं जूनियर नेशनल बालक/ बालिका कबड्डी चैंपियनशिप में निर्णायक की भूमिका निभाएंगे, टाक पूर्व में भी कबड्डी सीनियर नेशनल, डेप्युटी नेशनल, खेले इंडिया यूनिवर्सिटी में अपनी सेवाएं दे चुके हैं पूरे भारत के 594 राष्ट्रीय निर्णायक में से राजस्थान से दो निर्णायकों का सिलेक्शन हुआ है। राजस्थान से दो निर्णायक जाएंगे उसमें से दिलीप टाक श्री सीमेंट व शंकर लाल भीलवाड़ा से हैं राष्ट्रीय कबड्डी दिलीप टाक का चयन होने पर प्लॉट हेड विकास सिंगल जी व हेड नीरज कुमार शर्मा व गोविंद स्वरूप नियति ने दिलीप टाक को बधाई दी।

विदेशी पर्यटक बना हरिदास

पुष्कर (निसं.)। यूरोप युगोस्लाविया के समीप का ही रहने वाला विदेशी पर्यटक को भारतीय संस्कृति इतनी भाई है कि उनमें हिन्दू रीति रिवाज से दीक्षा लेकर अपना नाम हरिदास रखा है। हालांकि यह नाम उसके गुरु रामदास ने दीक्षा देने के बाद दिया है। हरिदास के गुरु राम दास ने बताया कि यह विदेशी पर्यटक एक साल पहले ऋषिकेश में मिला उस दौरान उसे कच्ची दीक्षा दी गई। रामदास महाराज पुष्कर चला आया, एक साल बाद विदेशी पर्यटक रामदास को ढूंढते पुष्कर पहुंच गया। राम दास ने विदेशी को एक साल की तपस्या के बाद उसे पुष्कर सरोवर के किनारे दीक्षा दी। अब पर्यटक को हरिदास के नाम से जाना जाएगा। यही नहीं पर्यटक ने जिस तरह साधु संन्यासी रहते हैं उसी तरह भोग धारण किया है। शरीर पर कपड़े धा पीले पहन लिए हैं। विदेशी पर्यटक को भगवान शिव की पूजा कैसे की जाती है इस बारे में समझाया गया। विदेशी पर्यटक खुद बाजार शिव के लिए पुष्प और दूध लेकर आया। विदेश अब अपने गुरु के साथ ही सरोवर के किनारे कुटिया में रह रहा है।

7 घण्टे बिजली बंद रहेगी आज

मसूदा (निसं.)। मसूदा विद्युत वितरण निगम के कनिष्ठ अभियंता ने बताया कि आवश्यक रखरखाव के कारण ब्यावर सड़क मार्ग पर रोड के पास में विद्युत लाइन के काब के चलते मसूदा फर्स्ट फिडर की विद्युत आपूर्ति दिनांक 06-01-2025 को प्रातः 08.00 बजे से दोपहर 03.00 तक बंद रहेगी। मसूदा सबस्टेशन से चलने वाले 11 केबी फीडर मसूदा फर्स्ट फीडर से चलने वाले क्षेत्र मसूदा बस स्टैंड, रेवारियों की ढाणी, रामगढ़ चौराया, राम तलाई की पाल, ब्यावर रोड हॉस्पिटल, एसडीएम ऑफिस, पंचायत समिति, इंदिरा कॉलोनी, मगरा कॉलोनी आदि क्षेत्रों की विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।

श्री गुरु गोविंद सिंह के प्रकाश पर्व पर आज सजणा कीर्तन दरबार

अजमेर, (कासं)। श्री गुरु गोविंद सिंह महाराज का प्रकाश उत्सव सोमवार को उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर श्री गुरु सिंह सजणा हाथीभाटा की ओर से प्रकाश पर्व के तहत रविवार को सुबह 10 से 1:30 तक व सांय 7 से रात्रि 10 बजे तक कीर्तन दरबार सजणा जाएगा। कीर्तन उपरंत लंगर वरताया जाएगा। 6 जनवरी को गुरु गोविंद सिंह जी की जयंती दिवस पर विशेष दीवान अर्जता सिनेमा के पास सीनियर रेलवे इंटीरिटीयूट में सुबह 11 से दोपहर 3 बजे तक सजणा जाएगा। दोपहर 1:30 बजे से लंगर वरताया जाएगा, सांय 7:30 बजे हाथीभाटा स्थित गुरुद्वारा में कीर्तन दरबार सजेगा।

मालासेरी डूंगरी से महाकुंभ में रथयात्रा शुक्रवार को

आर्सीद (निसं.)। जन-जन के आराध्य देव भगवान श्री देवनारायण की जन्मस्थली मालासेरी डूंगरी से महाकुंभ तक रथ यात्रा जाएगी। मालासेरी डूंगरी देवनारायण मंदिर के पुजारी हेमराज कोसबले ने बताया कि अभी विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक महाकुंभ मेला प्रयागराज होगा।

महाकुंभ मेला में भगवान श्री देवनारायण की जन्मस्थली मालासेरी डूंगरी के नाम पर जगह मिल चुकी है, और भगवान श्री देवनारायण के सेकड़ों देव भक्त गण सहित सेकड़ों पुजारीयों के साथ भगवान श्री देवनारायण जी का

रथ प्रयागराज के लिए शुक्रवार को सुबह 9.00 बजे भगवान श्री देवनारायण की महा आरती, अनुष्ठान के बाद गाजे बाजे के साथ रवाना होगा।

रथ यात्रा शुक्रवार सुबह 9.00 मालासेरी डूंगरी से रवाना होकर रुपाहेली भट्टा चौराहा पहुंचेगी वहां से अरबड़, शाहपुरा रोड, जहाजपुर, शंकरगढ़ बसोली, जयपुर, बूंदी बाईपास कोटा शहर से होते हुए किशनगढ़ बास सीताबाड़ी में रात्रि विश्राम होगा सभी जगह भक्तजनों द्वारा भगवान श्री देवनारायण की बाल स्वरूप मूर्ति का पूज्य पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद लेगे वहीं

सीताबाड़ी से वापस सुबह 9.15 बेज रवाना होते हुए, मध्यप्रदेश के शिवपुरी, करन, उत्तर प्रदेश, झांसी, उखई, आगरा लखनऊ एक्सप्रेस से बांदा, वित्रकूट से प्रयागराज पहुंचेगी वहां पर रविवार शाम को भगवान श्री देवनारायण जन्मभूमि मालासेरी डूंगरी के लिए अखाड़े के लिए मिली भूमि पर पहुंचेगी और भगवान श्री देवनारायण की बाल स्वरूप मूर्ति भक्त गण के द्वारा मिली जमीन पर बना दरबार में विराजित होंगे। नित्य पूजन, हवन, आरती सेवा, अखंड कीर्तन के साथ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक भगवान श्री देवनारायण जी विराजित होंगे।

गौ सेवा सबसे बड़ा धर्म : राधाचरण महाराज

मदनगंज-किशनगढ़, (निस)। हेडा परिवार की और से महेश विहार में आयोजित भागवत कथा के अंतर्गत पांचवे दिन कथावाचक राधाचरण महाराज ने सेवा भाव के साथ गौ सेवा का महत्व बताया।

भागवत महापुराण के अंतर्गत बताया गया कि जब टाकुर मां यशोदा के समीप बिराजे मां यशोदा उनके स्वरूप को देखकर अत्यंत आनंदीत हुईं, पूरे गोकुल में बधाईयां बटने लगीं, सब बाल गोपाल आनंदमय होकर नृत्य करने लगे, गोकुल साक्षात बूँदूठ हो गया। उन्होंने भगवान की बाल लीलाओं में माखन चोरी का प्रसंग सुनाते हुए कहा भगवान गोपियों के घर जाकर उनके भाव के कारण माखन चोरी करते हैं।

जब कृष्ण भगवान माखन चोरी रहे थे तभी बंधी हुई घंटी बज गई, तब भगवान ने योग माया से पूछा कि घंटी कब बजी, इसका मुझे ध्यान था, टाकुर स्वयं भोग लगा रहे थे तब घंटी बजानी पड़ी। महाराज ने कहा ब्रज के रस में राधा कृष्ण का मिश्रण है, उस माटी का सर पर तिलक करना चाहिए।

भगवान स्वयं गैया चारक गौ माता की पीछे नगे पांव चलकर गौ माता की सेवा करते थे, भगवान ने माला की डूंगरी बताया कि गौ माता पशु नहीं साक्षात माता का स्वरूप है, जिसमें सर्व देवी देवता निवास करते हैं। सांय नानी बाईं दो माथे में नरसी

राधाचरण महाराज ने गौ सेवा का महत्व बताया

द्वारा भेजा गया मायरे के पत्र को टाकुर जी को अर्पित किया। टाकुर जी ने पत्र को प्राप्त कर नरसी को निर्भय कर कहा कि भगवान के भक्त को किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं। आयोजक सहसकरण हेडा, प्रदीप, सुशील, मनीष हेडा ने टाकुर की पूर्व विधायक सुरेश डाक, विष्णुगोपाल सोमानी, सत्यनारायण सोमानी आमेट, रामकिशोर हेडा भीलवाडा, देवीलाल शास्त्री, पं रामनिवास शर्मा, प्रेमसागर, राजेंद्र, राधेश्याम झंवर शाहपुरा, सत्यनारायण मूंदडा, राजकुमार लड्डा, प्रेम काबरा, घनश्याम गांधी, डॉ अनूप नवाल, मदनलाल वैष्णव, नटवरलाल तोषनीवाल, अरुण पोरवाल, अनुराग नामधरानी, मणिधर भट्टड, अनिल सोमानी अजमेर, नवलकिशोर सोमानी का राधाचरण महाराज ने शौल ओढ़ाकर सम्मान किया। इस दौरान महाश्वरी पंचायत संस्था अध्यक्ष रामनारायण झंवर, मंत्री मंडल के नए नेतृत्व में महिला मंडल, नवयुवक मंडल व तरुण मंडल व पंचायत संस्था के पदाधिकारियों द्वारा महाराज का स्वागत कर आशीर्वाद लिया।

अजमेर, 5 जनवरी(कासं)। अजमेर शहर की सुरक्षा के इतिहास में एक नया अध्याय रविवार से जुड़ गया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवानी ने पुष्कर रोड़ स्थित पुरानी विश्राम स्थली में नये हरिभाऊ उपाध्याय नगर पुलिस थाने का शुभारम्भ किया। पुलिस थाने में पूरे स्टाफ की नियुक्ति कर दी गई है। पुलिस ने शुभारम्भ के साथ ही काम-काज संचाल लिया। यह पुलिस थाना हरिभाऊ उपाध्याय नगर सहित आसपास की करीब एक लाख आबादी को सुरक्षा प्रदान करेगा।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवानी ने पुलिस थाने के शुभारम्भ के बाद आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि अजमेर शहर में विगत 25 सालों में कोई नया थाना नहीं खुला था। क्रिश्चियनगंज थाने के क्षेत्राधिकार बहुत बड़ा होने के कारण पुलिस काफ़ी बरक लोड में काम कर रही थी। हमने राज्य सरकार के गठन के साथ ही इस दिशा में काम करना शुरू किया और पहले ही बजट में इस थाने के गठन को मंजूरी दिलाई। नया थाना कोटड़ा, हरिभाऊ उपाध्याय नगर, बी.के. कौल नगर, रातीडांग और आसपास के क्षेत्र को कॉलोनीयों में सुरक्षा प्रदान करेगा। करीब एक लाख आबादी को इस थाने से सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि अजमेर शहर में दूसरे देशों से आने वाले घुसपैठियों,



विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवानी ने पुष्कर रोड़ स्थित पुरानी विश्राम स्थली में नये हरिभाऊ उपाध्याय नगर पुलिस थाने का शुभारम्भ किया।

अतिक्रमण, अवैध कब्जों और अपराधों की शिकारितें लगातार बढ़ती जा रही है। पुलिस इनके खिलाफ सख्त कार्यवाही करे। पुलिस का उद्देश्य है अपराधियों में खौफ और आमजन में विश्वास। पुलिस अपने आदर्श वाक्य की पालना के लिए सख्त पुलिसिंग करे। अजमेर में पू माफिया, भट्टाचार, अतिक्रमण और अवैध कब्जों को किसी भी स्तर में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पुलिस ऐसे लोगों को चिन्हित करे और एक्शन ले। उन्होंने कहा कि विरोधी चाहे कितना भी दुष्चर और विरोध करे लेकिन विकास की यह गति अनवरत बनी रहेगी।

पिछले बजट में अजमेर जिले के लिए 1500 करोड़ रुपये की सौगात मिली है। यह बजट घोषणाएं अजमेर में विकास के नये आयाम स्थापित करेंगी। बजट घोषणा के तहत अजमेर में पेयजल की समस्या के निराकरण के लिए 270 करोड़ रुपये की घोषणा की गई है। इस राशि के नसीराबाद से नौसर तक नई पाइप लाईन और तीन नये सर्विस रिजर्व वायर बनाए जाएंगे। माकड़वाली गांव में आईटी पार्क की स्थापना होगी। कोटड़ा में नया सैटेलाइट अस्पताल स्थापित किया जा रहा है। जगहल लाल नेहरू अस्पताल में सुरस्पेसिलिटी

ब्लॉक बनेगा। अजमेर में स्पोर्ट्स कॉलेज, ऐथेलेटिक्स एकडमी, बालिका सैनिक स्कूल सहित अहम घोषणाएं की गई हैं। तेलंगाणा हाउस का आंबेडकर निरस्त किया गया है। साईंस पार्क का निर्माण पुनः शुरू करवाया गया है। विकास की यह गति लगातार बनी रहेगी। इस अवसर पर सभांगीय आयुक्त महेश चन्द्र शर्मा, आई.जी. ओमप्रकाश, जिला कलेक्टर लोक बन्धु, पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर गजेन्द्र सिंह राठी सहित कई वरिष्ठ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

अवैध बजरी से भरे डंपर ने पति पत्नी व दो बच्चों को कुचला

गुस्साए लोगों ने सड़क पर लगाया जाम, वाहनों की लगी कतारें

सायला, (निस)। सायला पुलिस थानाक्षेत्र के उन्नडी-पोषाणा के बीच मामाजी मंदिर के पास स्टेट हाइवे पर रविवार शाम को अवैध बजरी से भरे डंपर ने एक मोटरसाइकिल पर जा रहे पति-पत्नी समेत उसके दो बच्चों को कुचल दिया। जिससे चारों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार बावतरा निवासी उतमपुरी (32 वर्ष) पुत्र मांगपुरी गोस्वामी, उसकी पत्नी टेपादेवी (30 वर्ष), बेटे हेमराज (5 वर्ष) व बेटी चिन्टू (8 वर्ष) के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर बावतरा से कोरा जा रहे थे। इस दरम्यान उन्नडी-पोषाणा के बीच मामाजी मंदिर के पास स्टेट हाइवे पर अवैध बजरी से भरे डंपर ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि मोटरसाइकिल सवार दंपती व उसके दो बच्चों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों के शव भी सड़क पर बिखर गए। जबकि दुर्घटना के बाद डंपर चालक मौके से फरार हो गया।

सूचना पर सायला पुलिस मौके पर पहुंची तथा मृतकों के शवों को राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सायला की मोर्चरी में रखवाया गया। साथ ही अवैध बजरी से भरे डंपर को जब्त किया। वहीं दुर्घटना के बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग



सायला पुलिस थानाक्षेत्र के उन्नडी-पोषाणा के बीच मामाजी मंदिर के पास स्टेट हाइवे पर अवैध बजरी से भरे डंपर ने एक मोटरसाइकिल पर जा रहे पति-पत्नी समेत उसके दो बच्चों को कुचल दिया।

एकत्रित हो गए तथा स्टेट हाइवे को जाम कर दिया। जिससे सड़क के

दोनों साइड वाहनों की लम्बी कतारें लग गईं। समाचार लिखे जाने तक

लोग स्टेट हाइवे को जाम कर प्रदर्शन कर रहे थे।

नेट थिएटर पर वायलिन का मंगल ध्वनि कार्यक्रम

जयपुर। नेट थिएटर कार्यक्रमों की श्रृंखला में मंगल ध्वनि कार्यक्रम में प्रसिद्ध वायलिन वादक गुलजार हुसैन ने कार्यक्रम की शुरुआत राग बिहाग से की। नेट थिएटर के राजेश शर्मा राजू ने बताया कि प्रिंस आफ वायलिन गुलजार ने राग बिहाग में मध्य लय झपताल की बहुत ही सुंदर बंदिश मंगल गाओ चौक पुराओ को गंधार व निषाद स्वरों की नजाकत के साथ बढत करते हुए पेश किया। उन्होंने राग बिहाग में अलाप, जोड़ के बाद स्वर विस्तार से राग की बढत करते हुए गमक की ताने, तीनों सप्तक की ताने के साथ सुंदर तिहाईयो से राग का श्रृंगार किया। इस के बाद मध्यलय तीनताल में बंदिश लट उलझी सुलझा जा रे बालम को भावपूर्ण व बोला बोट के साथ प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। युवा तबला वादक मेराज हुसैन की लाजवाब संगत ने कार्यक्रम में चार चांद लगाए। कार्यक्रम में गुलजार ने अपने अगोचर तरब व पांच तारों के वायलिन पर अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के बाद थियेटर कलाकार रेनु सनादय से चर्चा करते हुए गुलजार हुसैन ने वायलिन के इतिहास के बारे में अनेक जानकारि दी।

गुलजार ने अपने कार्यक्रम में पांच सौ वर्षों में वायलिन में हुए बदलाव को भी अपने वायलिन कलेक्शन के जरिए दर्शकों को दिखाया। एक सवाल के जवाब में उन्होंने वायलिन कहा बना पर गुलजार ने बताया 16वीं सदी में हुए गोपा के इटली में आंद्रे अमाती ने प्रथम वायलिन बनाया। कार्यक्रम में इंपीरियल प्राइम कैपिटल के संगीत रसिक मनीष अग्रवाल की ओर से कलाकारों को स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। कार्यक्रम संयोजक नवल डांगी, कैमरा मनीष स्वामी, संगीत तपेश शर्मा, फोटोग्राफी और वीडियो मिहिजा शर्मा, प्रकाश जीवितेश शर्मा एवं मंच सज्जा अंकित शर्मा नोनु की रही।

मिनी बस ने कार को टक्कर मारी, दो की मौत



नेशनल हाईवे पर सड़क दुर्घटना में कार पूरी तरीके से क्षतिग्रस्त हो गई।

कोटा, (निस)। बूंदी जिले के तालेड़ा इलाके में नेशनल हाईवे 52 पर कोहरे के कारण एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में कार सवार व्यक्ति की मौत हो गई। जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं। वहीं एक शव ज्वाइंटों में मिला है। घायलों को उपचार के लिए कोटा के एमबीएस अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उनका इलाज चल रहा है। यह घटना रविवार सुबह लगभग 3 बजे की बताई जा रही है।

थानाधिकारी अर्जुत बागडोलिया ने बताया कि बूंदी की तरफ से कोटा एक कार जा रही थी। इसे पीछे की तरफ

दुर्घटना के बाद हाईवे पर जाम की स्थिति बन गई थी

से आ रही एक मिनी बस ने टक्कर मार दी मिनी बस भी बूंदी की तरफ से कोटा जा रही थी। घटना में कोटा निवासी शैलेंद्र कटरिया की मौत हो गई जबकि अमन और एक अन्य घायल हो गया। वहीं कोटा निवासी दिव्यांशु मीणा का शव ज्वाइंटों में पड़ा मिला है। अर्जुत बागडोलिया ने बताया कि दुर्घटना की सूचना मिलने पर तत्काल मौके पर पहुंच गए थे। दुर्घटना के बाद

दोनों वाहन पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए और हाईवे पर जाम की स्थिति बन गई थी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर यातायात को बहाल किया और जाम को हटवाया। मृतक का पोस्टमार्टम करावा कर शव परिवारों को सौंप दिया गया है। मिनी बस चालक के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है और उसे पकड़ने के लिए पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। इस दुर्घटना के संबंध में कार सवारों के परिवारों की शिकायत पर प्रकरण दर्ज किया जाएगा। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और मिनी बस चालक के बारे में जानकारी एकत्रित की जा रही है।

सिक्वोरिटी गार्ड को दी जान से मारने की धमकी

बीसलपुर बांध से मछली की चोरी रोकने का मामला

देवली (निस)। इन दिनों उपखंड क्षेत्र के बीसलपुर बांध से मछलियों का अवैध तौर पर शिकार करने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। इन्हीं मामलों के बीच रविवार को फिर से एक मामला सामने आया है। जहां मत्स्य ठेकेदार के सिक्वोरिटी कर्मियों ने पुलिस थाना सावर जिला अजमेर में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। यहां बादल पुत्र रमेश चंद्र मीणा निवासी नापाखंडा में पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाते हुए पुलिस को बताया कि 4 जनवरी शनिवार को सुबह 10:00 बजे के लगभग वह एवं उसके साथी कर्मचारी देवली उपखंड के बीसलपुर मनीष के जलभराव क्षेत्र में मत्स्य सिक्वोरिटी गार्ड की हैसियत से प्रस्त कर रहे थे।

इस दौरान खेजड़ी पाडलिया ग्राम में स्थित बीसलपुर बांध से कुछ व्यक्ति मछली का अवैध करते पाए गए। इस दौरान सिक्वोरिटी गार्ड कर्मियों ने दो रिपोर्ट के अनुसार मत्स्य ठेकेदार के सिक्वोरिटी कर्मियों ने इंजन बोट के जरिए भागकर अपनी जान बचाई है। यहां पुलिस रिपोर्ट में पीड़ितों ने बताया कि अवैध बजरी से भरे डंपर को कुचल दिया। इस दौरान उक्त 10-12 आरोपी नाव में सवार होकर बीसलपुर बांध से अवैध

आर आर फिशरीज कंपनी के सिक्वोरिटी टीम ने आरोपियों के विरुद्ध सवार पुलिस थाने में मामला दर्ज कराया

कुछ आरोपी पर पूर्व में दो बिहारी मजदूर की हत्या करने का लग चुका है आरोप

रूप से मछलियां पकड़ने की जाली लगाकर मछली पकड़ रहे थे। पुलिस थाने में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार सिक्वोरिटी गार्ड कर्मियों ने पंकज पारलिया और उसके साथियों को मछली चोरी करने रोका और अवैध रूप से मछली पकड़ने वाली जाली को जप्त करने की कार्रवाई शुरू कर दी थी। यहां बादल मीणा ने पुलिस को बताया कि इस दौरान उक्त आरोपी ने सिक्वोरिटी गार्ड कर्मियों पर जानलेवा हमला कर दिया था। मनीष पुत्र शिवराज मीणा परमेश्वर पुत्र शिवराज मीणा गजराज सिंह पुत्र उदय सिंह मीणा दिलखुश पुत्र रमेश रेगर दीपु पुत्र रमेश रेगर सहित अन्य आरोपियों पर बीसलपुर बांध से मछलियों चोरी करने का मामला दर्ज करवाया है। पीडित कर्मचारियों ने पुलिस को बताया कि पंकज पारलिया और उसके साथी नाव में बैठकर जाल से मछली चोरी करते दिखाई दिए। इस दौरान उक्त 10-12 आरोपी नाव में सवार होकर बीसलपुर बांध से अवैध

सिक्वोरिटी गार्ड कर्मचारियों ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि उक्त आरोपियों ने उन्हें धमकी दी है कि अगर उन्होंने उनके व्यक्तियों को बीसलपुर बांध में मछलियों का शिकार करते हुए रोका या जाल बगैरह जप्त किया तो वह अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। इस मामले में सावर पुलिस थाने ने उक्त आरोपियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर मामले में जांच शुरू कर दी है। गौरतलब है कि अभी हाल ही में लगभग 4 से 5 साल पहले उक्त आरोपियों में से पंकज पारलिया नामक आरोपी पर बिहार के दो मजदूरों की हत्या करने का मामला देवली पुलिस थाने में दर्ज हुआ था। उक्त दौरान पंकज पारलिया पुलिस से बचने के लिए फरार हो गया था। लेकिन देवली पुलिस पुलिस की सूत्रबद्ध और कड़ी मशकत के बाद दो बिहारी मजदूरों की हत्या के मामले में पुलिस ने पंकज पारलिया को गिरफ्तार कर लिया था बाद में न्यायालय ने पंकज पारलिया को न्यायिक हिरासत में भेज दिया था।

सब इस्पेक्टर ओमप्रकाश पुलिस थाना सावर जिला अजमेर का कहना है कि मत्स्य ठेकेदार के सिक्वोरिटी गार्ड कर्मचारियों ने बीसलपुर बांध से मछली चोरी को रोकने के दौरान मारपीट करने का आरोप लगाते हुए सावर पुलिस थाने में पंकज पारलिया सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई है। रिपोर्ट में फायरिंग करने का आरोप भी लगाया है। पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। इस मामले में निष्पक्ष जांच की जाएगी।

जयपुर (कासं)। प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ के लिए प्रदेश के तीन प्रमुख मंदिरों श्री मोती डूंगरी गणेश मंदिर, खादुश्यामजी मंदिर व सालासर बालाजी मंदिर द्वारा तीन ट्रक भोजन सामग्री भेजी जाएगी। महंत कैलाश शर्मा ने बताया कि इन तीनों मंदिर के ट्रक द्वारा 200 पीपे तेल, 50 पीपे देसी घी, 10 टन आटा व 5 टन दाल के रूप में तीन ट्रक भोजन सामग्री भेजी जाएगी। देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत सोमवार सुबह 11 बजे श्रीमोतीडूंगरी गणेश मंदिर से तीनों ट्रकों को खाना करेंगे। विश्व हिंदू परिषद के सानिध्य में ये कार्यक्रम होगा।

होटल में तोड़फोड़ करने के मामले में पांच पकड़े

भरतपुर (निस)। मथुरा गेट थाना पुलिस ने सारस चौगहे के समीप एक होटल में हमला करते हुए तोड़फोड़ करने के मामले में मुख्य आरोपी सहित पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है। 16 दिसम्बर को सारस चौगहे स्थित होटल ओम साई में कुक व एक सोनू नाम के एक व्यक्ति के बीच खाने को लेकर झगडा हो गया था। जिस पर होटल मालिक तेजवी ने

सभी आरोपी होटल से फरार हो गए। जिसके बाद तेजवी सिंह ने पुलिस कंट्रोल रूम पर घटना की सूचना दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। रात में ही तेजवी सिंह ने पुलिस को शिकायत दे दी। जिस पर पुलिस ने मामले का अनुसंधान करते हुए मुख्य आरोपी सोनू व उसके साथियों को गिरफ्तार किया। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है।

सभी आरोपी होटल से फरार हो गए। जिसके बाद तेजवी सिंह ने पुलिस कंट्रोल रूम पर घटना की सूचना दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। रात में ही तेजवी सिंह ने पुलिस को शिकायत दे दी। जिस पर पुलिस ने मामले का अनुसंधान करते हुए मुख्य आरोपी सोनू व उसके साथियों को गिरफ्तार किया। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है।

व्यवसायी को बादाम का ऑर्डर देकर 21 करोड़ की धोखाधड़ी

जयपुर। दौलतपुरा इलाके में एक व्यवसायी को बादाम का ऑर्डर देकर 21 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि दोसा निवासी व्यवसायी ने मामला दर्ज करवाया कि वह दौलतपुरा स्थित एक फर्म से बादाम का होलसेल बिजनेस करते हैं। आरोप है कि अप्रैल-2024 में आरोपी की ओर से 4 लाख किलो बादाम का ऑर्डर दिया गया। ऑर्डर दिए गए बादाम की कीमत करीब 21 करोड़ रुपए है। एडवाइस के तौर पर 1.69 करोड़ रुपए

दिए गए, आगामी 15 जनवरी 2025 में ऑर्डर का माल भिजवाना तय हुआ। आरोपी ने ट्रिप, दलाली रकम व पुराने डिफेंस अकाउंट को लेकर 80 लाख रुपए दिए गए, जबकि एडवाइस रकम में से वापस ले लिए। बादाम के एवज में उनके पास 89 लाख रुपए ही बाकी रह गए। 25 दिसम्बर 2024 को पोर्ट पर ऑर्डर आने की संभावना होने पर बकाया रकम के लिए आरोपी से कॉन्ट्रैक्ट किया। इससे माल को पोर्ट से छुड़ाकर तैयार कर तय समय पर दे सकें। बकाया रकम देने के बजाय आरोपी ने धमकाना शुरू कर दिया।

भीलवाड़ा में फ्लाईंग स्कूल को मिली मंजूरी

प्रदेश के विमानन क्षेत्र का विकास राज्य सरकार की प्राथमिकता : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश में विमानन क्षेत्र के विकास एवं क्षेत्रीय हवाई सम्पर्क को बढाने के लिए अहम कदम उठा रही है। इसी कड़ी में भीलवाड़ा की हमीरगढ़ हवाई पट्टी को विकसित करते हुए फ्लाईंग स्कूल खोला जाएगा। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा जरूरी स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। शर्मा ने कहा कि इस फ्लाईंग स्कूल के खुलने से युवाओं को प्रदेश में ही फ्लाईंग प्रशिक्षण के अवसर प्राप्त होंगे। प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा की भी फ्लाईंग स्कूल खोलने के लिए राज्य सरकार प्रयासरत है। इस संबंध में निवेशक यहां निवेश के लिए रूचि दिखा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में घरेलू विमानन बाजार निरंतर विकसित हो रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा विमानन क्षेत्र के

मंत्रिमंडल से नागरिक विमानन नीति-2024 को मंजूरी मिल चुकी है

लिफ्टेशुरू की गई उडान योजना से घरेलू यात्रियों की संख्या में वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में विमानन क्षेत्र में आधारभूत ढांचे का विकास और क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार करने के लिए राज्य सरकार महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है। इसी क्रम में मंत्रिमंडल से नागरिक विमानन नीति-2024 को मंजूरी मिल चुकी है। इस नीति में विमानन प्रशिक्षण सुविधाओं, विमानन रखरखाव सेवाओं को बढाने और एयरोस्पेस गतिविधियों को विकसित करने पर जोर दिया गया है।

चोरी के मामले में दो नाबालिग निरुद्ध किए

भरतपुर (निस)। शहर के मोरी चार बाग क्षेत्र में स्थित वकील नवीन शर्मा के मकान में हुई लाखों की चोरी की वारदात का पुलिस ने खुलासा कर दिया। इस मामले में पुलिस ने दो नाबालिग बालकों को निरुद्ध किया है। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है। सीओ सिटी पंकज यादव ने बताया कि चोरी की वारदात में दो नाबालिगों को निरुद्ध कर उनके कब्जे से चोरी किए गए दो लाख अडतीस हजार रूपये व 48 चांदी के सिक्के, दो सोने की अंगूठी, एक हीरे की अंगूठी, एक सोने की चैन और एक चांदी की अंगूठी को बरत दिया है। पुलिस के द्वारा निरुद्ध किए गए इन दो नाबालिगों के द्वारा पूर्व में भी छोटी चोरी की वारदात की गई थी। लेकिन इन बार चोरी के दौरान दोनों के हाथ बड़ा माल लग गया। फिलहाल पुलिस मामले के अनुसंधान में जुटी हुई है। वहीं इस मामले को लेकर सीओ सिटी पंकज यादव ने कहा है कि पुलिस चोरियों की वारदातों पर लगातार लोगों के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है। वहीं उन्होंने ऐसे व्यापारियों को भी हिदायत दी है कि अगर कोई भी व्यापारी नाबालिग बच्चों से सामान खरीदता है।

महिला की मौत, अंतिम संस्कार के लिए ले जाते समय झपकी आंखे, मची अफरा तफरी

करौली, (निस)। करौली सामान्य चिकित्सालय के आईसीयू वार्ड में एक महिला की संदिग्ध अवस्था में मृत्यु हो जाने के बाद परिवारजन उसका अंतिम संस्कार करने के लिए ले जा रहे थे। इस दौरान महिला के शरीर में हलचल होने और आंखों कि पलक झपकने से एक साथ अफरा तफरी सी मच गई और एक बार फिर महिला को अस्पताल लाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया लेकिन महिला के परिवारजन उसे किसी अन्यत्र स्थान पर ले गए। करौली अस्पताल के पीछे स्थित गायत्री कॉलोनी निवासी महिला शीला लोकेश सैन 25 को रविवार प्रातः 11:56 बजे भेल मेडिकल वार्ड में परिवार जनों ने बेहोशी की अवस्था में भर्ती कराया। जहां महिला की तबीयत बिगड़ने के बाद उसे गहन चिकित्सा इकाई आईसीयू वार्ड में दोपहर 12:30 बजे शिफ्ट कर दिया। जहां चिकित्सकों कि उपस्थिति में उसका उपचार किया गया। महिला कि तबीयत बिगड़ने पर उसको दोपहर



करौली अस्पताल से पुलिस कि मौजूदगी में विवाहिता महिला के शव को अन्यत्र स्थान पर ले जाते।

12:35 बजे जयपुर के लिए रैफर कर दिया लेकिन परिवारजन महिला को जयपुर नहीं ले गए और किसी प्रकार कि पुलिस कार्रवाई से इनकार करते हुए हांतिम लाश का स्वयं जिम्मेदार होना टिकट पर लिखकर महिला के चर्चिया ससुर माखनलाल और देवर पवन ने

दे दिया। दोपहर 1:33 बजे महिला ने अस्पताल के वार्ड में मृत तोड़ दिया। इस दौरान आईसीयू वार्ड के स्टाफ ने महिला कि इसी जी कि जांच कि जिसमें फ्लैट लाइन को देखते हुए उसे मृत घोषित कर दिया। परिवारजन मृतक महिला शीला

के शव को अस्पताल के पीछे स्थित निवास पर ले गए और महिला के पीछे पक्ष के लोगों को घटना कि सूचना दे दी। सायं 4:30 बजे के करीब महिला को जब अंतिम संस्कार के लिए ले जाने के लिए कफन काटी तैयार कि जा रही थी। इस दौरान अन्य महिलाओं

द्वारा मृतक महिला का अंतिम समय किया जाने वाला सिंगार करते समय उसके शरीर में हलचल और आंखों से पलक झपकने लगी, जिससे महिलाओं में एक साथ अफरा तफरी सी मच गई और एक बार फिर शीला को करौली सामान्य चिकित्सालय लाया गया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक नमो नारायण मीणा ने महिला कि इसी जी कि जांच की। इस दौरान मौके पर लोगों कि भारी भीड़ एकत्रित हो गई। घटना कि जानकारी मिलते ही कोतवाली थाना अधिकारी सुनील कुमार, अस्पताल पुलिस चौकी प्रभारी ब्रजराज शर्मा सहित कोतवाली पुलिस जापा मौके पर पहुंचा। इस दौरान मृतक महिला के परिवार जन महिला को जिंदा बताते हुए एंगुलेंस में रखकर अनियंत्र स्थान पर ले गए। इस दौरान पुलिस ने परिवारजनों से काफी समझाईश कि लेकिन परिवार के लोगों ने पुलिस की एक नहीं मानी। समाचार लिखे जाने तक मृतक शीला के जिंदा रहने या वापस मृतक घर ले आने कि सूचना नहीं मिल पाई।

अपात्र व्यक्तियों ने 31 जनवरी तक नाम वापस नहीं लिए तो सख्त एक्शन होगा : सुमित गोदारा

जयपुर। अपात्र और सक्षम व्यक्तियों द्वारा खाद्य सुरक्षा योजना में अनुचित तरीके से लाभ उठाने वालों के खिलाफ सरकार सख्त कार्रवाई करने वाली है। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने बताया कि गिव अप अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का प्रदेशभर में व्यापक असर हो रहा है। हजारों लोग आगे आकर अपना नाम खाद्य सुरक्षा योजना से हटा रहे हैं। अपात्र व्यक्तियों को इस योजना के दायरे से बाहर निकाले जाने का कार्य विभाग की ओर से लगातार किया जा रहा है। गोदारा ने बताया कि 31 जनवरी तक सक्षम और अपात्र परिवारों को इस योजना से अपना नाम हटा लेना चाहिए। ऐसा नहीं करने पर 31 जनवरी के बाद विभाग की ओर

से सख्त एक्शन लिया जाएगा। योजना का अनुचित लाभ लेने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही वसूली की कार्रवाई भी की जाएगी। मंत्री गोदारा ने कहा कि जबरन हटाए गए लोगों को इस योजना का अधिक से अधिक लाभ मिल सके। इसी उद्देश्य से यह अभियान चलाया जा रहा है। गोदारा ने बताया कि गिव अप अभियान लंबे समय से चल रहा है। प्रदेश के लोग आगे आकर इस अभियान में हिस्सा ले रहे हैं। प्रदेशभर में लगभग 7 लाख अपात्र व्यक्तियों के नाम खाद्य सुरक्षा सूची से हटाए गए हैं। ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस अभियान से जोड़ने के लिए जनजागृति कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं ताकि लोग आगे आकर योजना का

- गिव अप अभियान का बड़ा असर : 2 महीने में लगभग 7 लाख व्यक्तियों के नाम खाद्य सुरक्षा योजना से हटाए गए
- 'वंचित जबरन हटाए गए लोगों तक खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ पहुंचाना सरकार का मुख्य उद्देश्य'

जबरन हटाए गए और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराना है। हालांकि कई सक्षम व्यक्तियों के योजना में शामिल होने के कारण पात्र और जबरन हटाए गए इस योजना के लाभ से वंचित हो रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने अपात्र व्यक्तियों को योजना से खेचने से बाहर निकालने का विकल्प दिया है। सक्षम और अपात्र परिवारों को खाद्य सुरक्षा योजना से नाम हटाने के लिए स्थानीय उचित मूल्य की दुकान जाना होगा। वहां पर निर्धारित फॉर्म को भरना होगा। दरअसल यह फार्म एक तरह का घोषणा पत्र है जिसके जरिए व्यक्ति द्वारा स्वयं की इच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना के तहत लाभ नहीं लेने की अपील की जाती है। जो परिवार अपात्र है या जो सक्षम है। उन्हें यह फार्म भरकर जमा कराना है।

इसके बाद विभाग की ओर से संबंधित परिवार का नाम योजना से हटा दिया जाएगा। 31 जनवरी 2025 के बाद अगर कोई व्यक्ति अनुचित रूप से लाभ लेते पाए गए तो विभाग की ओर से खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा को बजाज कोमत से वसूली की जाएगी। उनके खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी। खाद्य सुरक्षा में अनुचित लाभ लेने वालों के करीब 7 लाख लोगों के नाम इस योजना से हटाए गए। सर्वाधिक 71932 व्यक्तियों के नाम अलवर जिले में हटाए गए। सर्वाधिक नाम हटाने वालों में दूसरे स्थान जयपुर जिला है जहां 41806 व्यक्तियों के नाम हटाए गए। तीसरे स्थान पर उदयपुर में 40314 अपात्र लोगों के नाम हटाए गए।

राष्ट्र निर्माण में नई पीढ़ी को तराशने का कार्य करते हैं शिक्षक : डॉ. पूनिया



भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया का जयपुर के आमेर विधानसभा क्षेत्र के राजावास में स्वागत किया गया।

जयपुर। भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने जयपुर के आमेर विधानसभा क्षेत्र के राजावास में 1.12 करोड़ रुपये की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण किया। इस दौरान विधायक प्रशांत शर्मा, जिला प्रमुख रमा देवी, उप जिला प्रमुख मोहन डारग इत्यादि सहित व स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

- डॉ. सतीश पूनिया ने राजावास में 1.12 करोड़ रुपये की लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण किया
- राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद के प्रांतीय अधिवेशन में शामिल हुये डॉ. पूनिया और मदन दिलावर

सतीश पूनिया ने राजावास में पशु चिकित्सालय उपकेंद्र, सामुदायिक भवन, राजकीय विद्यालय में दो कक्षा-कक्ष, राजकीय विद्यालय में संबोधित बास्केटबॉल खेल मैदान, राजकीय विद्यालय राजारामपुरा में कक्षा-कक्ष, राजावास मुख्य गांव से यादवों की ढाणी सीसी तक सड़क निर्माण कार्य इत्यादि विकास कार्यों का लोकार्पण किया। इसके बाद जयपुर में आयोजित राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद के प्रांतीय अधिवेशन में डॉ. सतीश पूनिया और शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रदेशभर से पधारे शिक्षक शामिल हुये। डॉ. पूनिया ने कहा कि, समाज, प्रदेश और राष्ट्र के उत्थान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, माता-पिता के साथ-साथ बच्चे में संस्कार निर्माण व शिक्षा को नींव मजबूत करने में शिक्षक बड़ी सकात्मक भूमिका निभाते हैं, जन-जन में गुरुकी का सम्मान सर्वोच्च होता है, एक तरह से राष्ट्र निर्माण में नई पीढ़ी को तराशने का कार्य शिक्षक करते हैं।

21 करोड़ की लागत से लवाण सब-स्टेशन का संचालन शुरू

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की किसानों को वर्ष 2027 से दिन में अच्छी गुणवत्ता की बिजली उपलब्ध करवाने के निर्देशों की पालना में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुये विद्युत प्रसारण निगम ने दौसा जिले में सब-स्टेशन, लवाण का संचालन शुरू कर दिया गया है। प्रसारण निगम के प्रबन्ध निदेशक नथमल डंडेल ने बताया कि अभी तक लवाण के आस-पास के इलाकों में बिजली सप्लाई 220 केवी ग्रिड सब-स्टेशन, दौसा व 132 केवी ग्रिड सब-स्टेशन, तृंगा से होती थी जिससे वोल्टेज में उतार-चढ़ाव रहता था, इसी कारण लवाण में 132 केवी ग्रिड सब-स्टेशन बनाने की आवश्यकता काफी समय से महसूस की जा रही थी। 132 केवी ग्रिड सब-स्टेशन लवाण के बनने से बनियाना, पाटन, लवाण एवं आस-पास के क्षेत्रों की विद्युत एंजित में कमी आयेगी, वोल्टेज में सुधार होगा एवं निबंध विद्युत आपूर्ति होगी। डिंडेल ने बताया कि इस ग्रिड सब-स्टेशन के बनने में लगभग 21 करोड़



विद्युत प्रसारण निगम ने दौसा जिले में 132 केवी ग्रिड सब-स्टेशन, लवाण का संचालन शुरू किया।

रुपये की लागत आई है तथा इस ग्रिड सब-स्टेशन के निर्माण में लगभग 15.66 लाख यूनिट प्रतिवर्ष विद्युत एंजित की कमी संभावित है, जिससे लगभग 132.170 लाख रुपये प्रतिवर्ष राजस्व की बचत अपेक्षित है।

प्रदेश में 9 जनवरी तक पूरी हो जाएगी जिलाध्यक्षों की चुनाव प्रक्रिया : मदन राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि भाजपा विश्व की एकमात्र ऐसी राजनीतिक पार्टी जहां एक निश्चित समय बाद बृथ स्तर से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक निर्वाचन प्रक्रिया के आधार पर बनाए जाते हैं। भाजपा में वर्तमान समय में संगठन पर्व निर्वाचन प्रक्रिया चल रही है। बृथ समिति का निर्विरोध प्रक्रिया समाप्त होने के बाद अब मंडल अध्यक्षों की प्रक्रिया पूरी होने वाली है। इसके बाद 8 से 9 जनवरी तक जिला अध्यक्षों की चुनाव प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी। राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में प्रदेश अध्यक्ष पद पर चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष रूप से कराने के लिए गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी को निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिलाध्यक्षों के निर्वाचन के बाद प्रदेश अध्यक्ष पद की चुनाव प्रक्रिया पूरी होगी और इसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाएंगे। इसके बाद कार्यकारिणी बनाई जाएगी और कार्यों का वितरण

- 'गुजरात के पूर्व सीएम और राजस्थान निर्वाचन अधिकारी रूपाणी कराएंगे प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव'
- 'संगठन पर्व पूर्ण होने के बाद कार्यकारिणी का होगा विस्तार, इसके बाद कार्यों के अनुरूप बनाएं जाएंगे पना प्रमुख'

विपक्ष की भूमिका में कांग्रेसी नेताओं को केवल आंदोलन ही करना है। गहलोत और पायलट गत सरकार में भी व्यवस्थित रूप से कार्य नहीं कर पाए और अब विपक्ष में रहकर भी विपक्ष की भूमिका सही नहीं निभा पा रहे। गहलोत सरकार के सभी फैसले या तो चंद लोगों को खुश करने वाले थे या फिर जनता के खिलाफ थे। उन्होंने एक विधानसभा वाले क्षेत्र को जिला बना दिया, जबकि कहीं 8 से 11 विधानसभा वाला क्षेत्र जिला है, कहीं 3.5 लाख जनसंख्या पर जिला बना

दिया तो कहीं 22 लाख की जनसंख्या पर जिला है। ऐसे में उनके निर्णय अप्रासंगिक और अताकिक थे। मदन राठौड़ ने आगामी बजट को लेकर कहा कि भाजपा सरकार ने अपने पहले बजट में चुनावी घोषणाओं को शामिल करते हुए उन्हें पूरा करने की दिशा में कार्य किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भाजपा के संकल्प पत्र में से करीबन 50 फीसदी वादों को पूरा कर दिया और शेष वादों को भी पूरा करने के लिए कार्य योजनाओं को तैयार कर रहे हैं।

कर्मल राठौड़ ने हरिराम रेवाड़ और नितीश कुमार को दी श्रद्धांजलि

जयपुर। सैनिक कल्याण मंत्री कर्मल राज्यवर्धन राठौड़ ने जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा में वीरगति को प्राप्त कोटपुलती बहरोड़ और नागौर निवासी लांस नायक नितीश कुमार व हवलदार हरिराम रेवाड़ को विनम्र श्रद्धांजलि दी। कर्मल राठौड़ ने कहा, मां भारती के अमर सपुतों के सर्वोच्च बलिदान पर हम सभी भारतवासियों को गर्व है। कृतज्ञ राष्ट्र सदा सर्वदा उनका ऋणी रहेगा। हमारे अदम्य साहसी जवानों ने परिवार से पहले राष्ट्रहृत् को सर्वप्रथम सर्वोपरि रखा। कर्मल राज्यवर्धन राठौड़ ने ईश्वर से अमर बलिदानियों की आत्मा को अपने श्रौचरणों में स्थान देने और शोक संतप्त परिवारों की दुःख की इस घड़ी में साहस प्रदान करने की कामना की। युवा मामले एवं खेल मंत्री कर्मल राज्यवर्धन राठौड़ सम्मान समारोह में शामिल हुए। कर्मल राठौड़ ने इस अवसर पर राजस्थान की प्रतिभावाण क्रिकेट खिलाड़ी सुशीला मीणा का उत्साहवर्धन कर सम्मानित और प्रोत्साहित किया एवं उज्वल भविष्य की कामना की। कर्मल राठौड़ ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में आज देश के युवा विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं।

योग क्रांति के बाद अब पंच क्रांतियों का शंखनाद : स्वामी रामदेव

जयपुर/हरिद्वार। पंतजलि योगपीठ के परमाध्यक्ष स्वामी रामदेव व महामंत्री आचार्य बालकृष्ण की उपस्थिति में पंतजलि संस्थान का 30वां स्थापना दिवस पंतजलि वैलनेस, हरिद्वार स्थित योगभवन सभागार में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के देशभर के पंतजलि योगपीठ संगठन के 6000 से अधिक प्रभारीगणों की उपस्थिति में स्वामी रामदेव ने विगत 30 वर्षों की सेवा, संघर्ष व साधना से परिचय कराया तथा पंतजलि योगपीठ की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने योग क्रांति की सफलता के बाद पंच क्रांतियों का शंखनाद करते हुए कहा कि शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक, वैचारिक-सांस्कृतिक व रोगों-भोगों-ग्लानि-कुण्ठाओं से आजादी का बड़ा कार्य पंतजलि से प्रारंभ करना है।



पंतजलि योगपीठ के परमाध्यक्ष स्वामी रामदेव व महामंत्री आचार्य बालकृष्ण की उपस्थिति में पंतजलि संस्थान का 30वां स्थापना दिवस पंतजलि वैलनेस, हरिद्वार स्थित योगभवन सभागार में सम्पन्न हुआ।

प्रतिशत कर्नेट वेद, दर्शन, उपनिषद, पुराणों का होगा, भारत के गौरव का होगा। उसमें अध्यात्म विद्या होगी, सनातन बोध होगा, भारत बोध होगा। यह मैकाले का एजुकेशन सिस्टम नहीं है। जब भारतीय शिक्षा बोर्ड से पहले एक लाख और बाद में 5 लाख स्कूल एफिलिएट हो जाएंगे तो भारत का बचपन और यौवन सुरक्षित हो जाएगा, यही शिक्षा की आजादी का संकल्प है। हम भारतीय शिक्षा बोर्ड के माध्यम से विदेशी आक्रमणकारियों, अकबर, औरंगजेब या अंग्रेजों की झूठी महानता नहीं बल्कि छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप व क्रांतिकारियों का सच्चा इतिहास पढ़ाएंगे। रोग हमारा स्वभाव नहीं, योग ही

हमारा स्वभाव है। आज पूरी दुनिया में सिंथेटिक दवा, अलग-अलग प्रकार स्टेरॉयड, पेन किलर इत्यादि खा-खाकर लोगों के शरीर खराब हो रहे हैं। चिकित्सा की आजादी के लिए पंतजलि वैलनेस, योगग्राम, निरामयम, चिकित्सालयों एवं आरोग्य केन्द्रों से लेकर, आधुनिक रिसर्च के माध्यम से ऋषियों की विरासत और विज्ञान की लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। हमने 5000 से अधिक रिसर्च प्रोटोकॉलस व 500 से अधिक रिसर्च पेपर्स वर्ल्ड क्लास इंटरनेशनल जर्नलस में पब्लिश करके असाध्य रोगों से मुक्ति का मार्ग दुनिया के सामने रखा है। हमारा संकल्प है कि हम लोगों को रोग होने से बचायेंगे भी और रोग होने के बाद उन रोगों से योग-आयुर्वेद के माध्यम से लोगों को मुक्ति दिलाएंगे। आज पूरी दुनिया में कुछ चंद मुद्दी भर लोगों ने अपने क्रूर पंजों में पूरे अर्थतंत्र को जकड़ रखा है। हमारा लक्ष्य है समृद्धि सेवा के लिए व अर्थ परमार्थ के लिए। अभी तक पंतजलि ने शिक्षा, स्वास्थ्य, अनुसंधान, चरित्र निर्माण, राष्ट्रनिर्माण आदि में 1 लाख करोड़ रुपये की चैरिटी की है। 10 हजार से अधिक सेंटर्स के साथ 25 लाख से अधिक प्रशिक्षित योग शिक्षकों तथा 1 करोड़ कार्यकर्ताओं की निस्वार्थ सेवा से यह सब राष्ट्र निर्माण व चरित्र निर्माण का सेवा कार्य हो रहा है। हमारा संकल्प है कि स्वदेशी का आंदोलन इतना बड़ा खड़ा हो कि आर्थिक लूट, गुलामी और

- 30 वर्ष पूर्ण होने पर पंतजलि का संकल्प
- 'आगामी पाँच वर्षों में 5 लाख विद्यालयों को भारतीय शिक्षा बोर्ड से जोड़ने का लक्ष्य'
- 'अभी तक पंतजलि 1 लाख करोड़ से ज्यादा की चैरिटी कर चुका है'
- '500 करोड़ से ज्यादा दुनिया के लोग योग धर्म, सनातन धर्म में श्रद्धा रखते हैं'

दरिद्रता से भारत निकले तभी भारत परम वैभवशाली बनेगा। बीपी, शुगर, थायरॉइड, अस्थमा, आर्थराइटिस, स्ट्रोक, डिप्रेशन, नींद आदि बीमारियों की गोलियाँ छुड़वाकर हम देश के प्रतिवर्ष 100 से 200 लाख करोड़ रुपये बचाते हैं। जिस भारत ने पूरी दुनिया को सर्वप्रथम संस्कृत विश्वारा का संदेश दिया वो भारत यदि वैचारिक और सांस्कृतिक गुलामी से गुजर तो ठीक नहीं। आज भारतवर्ष हर बात पर दुनिया के उन दरिद्र देशों पर निर्भर रहता है जिनके पास केवल चंद कागज के टुकड़े, चंद डॉलर्स या पाउण्ड्स हैं। सच्चा व असली धन केवल पैसा नहीं है अपितु अच्छा स्वास्थ्य, सुखी घर-परिवार व चरित्र, योगदान व दैवीय सम्पद ही सच्चा धन है। हमें वैचारिक और सांस्कृतिक गुलामी से भारत को मुक्ति दिलानी है। इसलिए हम कहते हैं कि हमें इस सनातन धर्म को, वेदधर्म

मुख्यमंत्री के विजयनरी लीडरशिप में प्रदेश में बदल रहा शिक्षा का स्वरूप

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजयनरी लीडरशिप में राज्य सरकार द्वारा शिक्षण संस्थानों में अध्ययन-अध्यापन कार्य को मजबूती प्रदान करने से लेकर कौशल विकास तक विशेष फोकस किया जा रहा है, ताकि शिक्षा ग्रहण के साथ ही नई पीढ़ी को वर्तमान और भविष्य के लिए तैयार किया जा सके। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार राज्य में संचालित 134 स्वामी विवेकानन्द राजकीय मोडल विद्यालयों को अंग्रेजी स्कूलों में बदल दिया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए संचालित किए जा रहे कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में सुविधाओं का विस्तार करते हुए ओपनजिम, स्मार्ट किचन एवं लोन्डी मशीनों की स्थापना की गई। मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रदेश में लगभग 89 हजार टेबलेट मय इंटरनेट कनेक्शन तथा 8.51 लाख साइकिल वितरित की गईं।

शीतलहर व धुंध ने बढ़ाई ठण्ड, जन जीवन प्रभावित

गंगापु्र सिटी, (निसं)। मुख्यालय सहित आस पास के क्षेत्र में मौसम का मिजाज एक बार फिर बदल गया। रविवार को गंगापु्र और आसपास के क्षेत्र में धुंध और घना कोहरा छाया रहा । सर्द हवाओं के कारण गलन और टिटुरन बढ़ गई। यहां अब एक बार फिर कड़ाके की सर्दी का सितम जारी है। वहीं सुबह के समय धुंध और कोहरे का असर रहा। इसके कारण सुबह साढ़े 9 बजे तक सूर्यदेव के दर्शन नहीं हुए।

गंगापु्र सिटी में वेस्टर्न डिस्ट्रिब्स से मौसम में बदलाव देखा गया था। इससे पहले दो दिन थोड़ी धूप निकलने से कड़ाके की सर्दी से कुछ राहत मिली थी, लेकिन रविवार को मौसम में आए बदलाव के कारण फिर से सर्दी का असर बढ़ गया। रविवार को सुबह जब लोग उठे तो घने कोहरे और धुंध के आगोश में खुद को पाया। सुबह के समय सर्द हवा भी चलती दिखाई दी।

जिसके कारण गलन और टिटुरन बढ़ गई। लोग रविवार को छुट्टी के कारण



घने कोहरे के आगोश में गंगापु्र सिटी शहर।

सर्दी से बचने के लिए बिस्तरों में ही दुबके रहे। कोहरे के कारण लोगों को

सुबह के समय कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। विजिबिलिटी काफी कम होने

के कारण वाहन ड्राइवर्ों को लाइट जलानी पडी। वहीं तापमान में गिरावट

होने और सर्द हवाओं के चलने से कड़ाके की सर्दी के कारण लोगों का हाल बेहाल हो गया है। लोगों की दिनचर्या भी काफी प्रभावित हो रही है। लोग देरी से बिस्तरों से उठे और इसके कारण बाजार भी देरी से खुल रहे है। वहीं लोग ऊनी कपड़ों में लिपटे नजर आए। बाजार में जगह-जगह चौराहे और गली मोहल्लों के नुकड़ पर लोग अलाव जलाकर सर्दी से बचते नजर आए। रविवार को न्यूनतम तापमान 1० डिग्री और अधिकतम तापमान 23 डिग्री पर रहा।

कड़ाके की ठंड पडने की संभावना : मौसम विभाग की ओर से रविवार को गंगापु्र सिटी जिला मुख्यालय सहित आस पास के क्षेत्र में हल्की धुंध और कोहरे का असर रहा। मौसम विभाग के अनुसार आगामी एक-दो दिन में यहां कड़ाके की ठंड पडने की संभावना है और न्यूनतम तापमान सिंगल डिजिट में जाने के आसार है।

जान से मारने की नीयत से हमला करने का आरोप

चार लोग हुए गंभीर घायल, जीप को किया क्षतिग्रस्त

सादुलपुर, (निसं)। शराब ठेके की रंजिश में वाहनों से पीछा कर लाठी सरियों से मारपीट कर जीप को क्षतिग्रस्त करने तथा शराब ठेके की रकम को छीनकर ले जाने के आरोप में रविवार को सिद्धमुख थाना पुलिस ने मामला दर्ज किया है। शाम पांच बजे थाना अधिकारी रामकरण सिद्ध ने बताया कि आशीष कुमार उम्र 23 साल निवासी चैनपुरा छोटा ने मामला दर्ज करवाकर बताया कि धानोठी छोटी तिराहे सिद्धमुख सिवानी सडक पर शराब के ठेके पर सेल्सपीट का कार्य करता है।

शराब ठेका सीता देवी पत्नी विजेंद्र कुमार निवासी वार्ड नंबर 27 राजगढ के नाम से स्वीकृत सरकारी दुकान है। इससे पहले उक्त दुकान सतवीर राजपूत निवासी गांव सांगा जिला भिवानी हरियाणा के नाम से संचालित थी। जो यह दुकान कुलदीप उर्फ धोलिया, नवीन निवासी दुमकी तहसील सिद्धमुख, देवू सिंह, बंटी उर्फ बंटू सिंह व देव राजपूत निवासी हिताराला सिद्धमुख चलाते थे। जिनसे सरकारी दुकान की गारंटी राशि

- शराब ठेके की बिक्री की राशि ले जाने का लगाया आरोप, पुलिस ने किया मामला दर्ज**

पूर्ति नहीं होने के कारण आबकारी विभाग ने दुकान के लाइसेंस को निरस्त कर दिया। तथा दुकान को सरकार ने दुबारा से नए सिरे से सीता देवी पत्नी विजेंद्र कुमार के नाम से आवंटित कर दिया। दिनांक ०4 जनवरी 2०25 को रात्रि 9.30 बजे वह उसकी सरकारी दुकान से चार दिन की राशि राजगढ सीता देवी पत्नी विजेंद्र कुमार के घर देने के लिए आ रहा था, उसके साथ अंकित निवासी भोजाण, ललित कुमार, बंटी, मोहित उसके ठेके की कैपर गाडी में थे। गाडी लेकर गांव दुमकी, तांबा खेडी, राजगढ के आम रास्ते पर नजदीक पहुंचे तो तीन गाडियां में सवार होकर लगभग एक दर्जन से अधिक लोग लाठी सरियों के साथ आए, जिन्होंने रास्ता पर

हमारे आगे पीछे गाडियां लगाकर रोक लिया। तथा जबरदस्ती उन सभी को उनकी गाडी से घसीट कर नीचे उतार लिया। तथा जान से मारने की नीयत से लाठी सरियों से हमला किया एवं जमीन पर पटक कर उनके साथ मारपीट कर गाली उनके साथ गाली गलोक किया।

तथा कहा कि ठेकेदार विजेंद्र कुमार को जान से मारेंगे, एवं शराब ठेका नहीं चलने देने की धमकी दी तथा उनकी गाडी से शराब की बिक्री की रकम निकाल कर ले गए। तथा उनकी गाडी के शीशे लाठी घसियों से तोड़ दिया तथा जान से मारने की धमकी दी। जिसके बाद गाडी लेकर रवाना हुए तो आरोपीयों ने अपने गाडी से पीछा कर उनकी गाडी को टक्कर मारी। जिसके कारण उनकी गाडी खेतों में चली गई और फंस गई तथा अपनी गाडी को छोडकर खेतों में छिपते हुए अपनी जान बचाई तथा ठेकेदार और पुलिस को घटना की जानकारी थी। तथा घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हिस्ट्रीशीटरों के खिलाफ कार्यवाही, चार गिरफ्तार

पावटा। जिला कोटपुतली बहरोड़ पुलिस अधीक्षक राजन दुय्यंत ने बताया कि महापिरीक्षक जयपुर रंज जयपुर द्वारा संपूर्ण जिले में ए्रिया डोमिनेशन अभियान के तहत प्रागपुरा थाना पुलिस द्वारा बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते अपराधियों, सक्रिय हिस्ट्रीशीटर, फायर आर्स एक्ट में चालान शुदा अपराधियों एवं उनके सह अभियुक्तों के विरुद्ध प्रभावी कार्य वाही करने हेतु अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के सुपरविजन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजवत के निर्देशन एवं प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार के नेतृत्व में 6 अलग अलग टीमों का गठन कर 4 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है।

प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार

ने बताया कि प्रागपुरा थाना क्षेत्र में निवासरत फायर आर्स में चालन शुदा अपराधियों साहित्य हिस्ट्रीशीटरो के ठिकानों पर दबिश देकर महेश सारण पुत्र सिंभूदयालनिवासी सारणों की ढाणी न बडनगर, अमित पुत्र जयराम निवासी टीला जी मंदिर के पास खेलना, धर्मेन्द्र सिंह उर्फ लाला ठाकुर पुत्र मुकेश सिंह निवासी पाचूडाला, महेंद्र पुत्र भैरूराम निवासी टसकोला, मजीद खान पुत्र नरमान निवासी प्रागपुरा, योगेश पुत्र हंसराज निवासी रामपुरा को गिरफ्तार किया गया है। एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत प्रागपुरा थाना पुलिस द्वारा ताबडूतोड़ कार्रवाइयों को अंजाम दिया गया। पुलिस द्वारा अज्ञानक चलाए गए अभियान से अपराधियों में हड़कंप मचा गया।

आंजनेय हनुमान मंदिर में पौषबड़ा महोत्सव

जयपुर। विश्वकर्मा इलाके में स्थित रीको इंडस्ट्री एरिया सरना डूंगर में मानव सेवा संस्थान एवम श्री राधा रमण गौशाला समिति के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को आंजनेय अनुमान मंदिर में विशाल पौषबड़ा महोत्सव के साथ चदर दस्तूर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में पहुंचे संसं-महात्माओं ने पंगत प्रसादी

ग्रहण की। इससे पूर्व शुक्रवार को मंदिर प्रांगण में महंत परशुराम दास महाराज के सानिध्य में रामायण पाठ का शुभारंभ किया गया था। जो प्रात सवा 9 बजे से प्रारंभ हुआ। सर्व हिंदू समाज के तत्वावधान में शनिवार को प्रात सवा 8 बजे हवन पूर्णहुति दी गई। जिसके पश्चात मंदिर प्रांगण में विशाल पौषबड़ा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। पौषबड़ा

वितरण कार्यक्रम दोपहर 12 से रात्रि 9 बजे तक जारी रहा। पौषबड़ा महोत्सव हवामहल विधायक बालमुकुंदचार्थ, निम्बाकें संप्रदाय रेनवाल बड़ा मंदिर के जुगत बिहारी महाराज, सियाराम बगीची अवधेश महाराज सहित करीब साढ़े 4 हजार से अधिक संत महात्माओं ने 6 हजार श्रद्धालुओं के साथ पंगत प्रसादी ग्रहण की।

फरार स्मैक तस्कर गिरफ्तार

जयपुर। जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 465 ग्राम अवैध स्मैक मामले में फरार चल रहा ट्रांसपोर्ट नगर का हिस्ट्रीशीटर मोहम्मद साकिर को गिरफ्तार किया है। इस मामले में पूर्व में फैसल कुरैशी,समीर खान व शरीफ को गिरफ्तार किया चुका है और साथ ही नशे से बेचान राशि 17.3० लाख रूपये की बरामद की जा चुकी है। पुलिस साकिर में सामने आया है कि गिरफ्तार किए गए और फैसल कुरैशी आपस में पार्टनर है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वादाते खुलने की आशंका जताई जा रही है।

गैस सलेण्डर फटने से महिला झुलसी

टोंक। दूनी थाना क्षेत्र के ग्राम आंवा में शनिवार शाम को खाना बनाते समय गैस भभक जाने से महिला झुलक गयी तथा गैस फटने से झोपडी जलकर हुई राख। प्रात जानकारी के अनुसार आंवा कस्बे के सीतापुरा रोड के पास पांच साल से निवास कर रही महिला हीरा गुर्जर उम्र 45 साल जो अपनी झोपडी रहती है, जो शनिवार को सार्य खाना बनाने के लिए गैस जलाने लगी तो अचानक गैस की टंकी ने आग पकड़ ली, जिससे महिला चपेट मे आ गई और बुरी तरह झुलस गई। महिला के चिल्लाने पर आस पास के ग्रामीणों द्वारा उसको झोपडी से बाहर निकाला और मौके पर पहुंचे आंवा सरपंच दिव्यांशु भारद्वाज ने अपनी कार से उसे दूनी चिकित्सालय ले गये, जहां से गम्भीर हालत में महिला को टोंक जिला अस्पताल रैफर कर दिया। बाद में गैस की टंकी फट जाने से झोपडी जलकर राख हो गई। सूत्रों के अनुसार महिला अपनी पति से दूर आंवा में किराये से रहती थी, जहां वह चाय बेचकर अपना पालन पोषण कर रही थी।

क्रिकेट खेल रहे युवक की हार्ट अटैक से मौत

युवक आउट होकर पैवेलियन लौट रहा था तो सीने में दर्द हुआ

जोधपुर, (कासं)।जोधपुर में क्रिकेट खेल रहे एक युवक की हार्ट अटैक से मौत हो गई। युवक आउट होकर जब पैवेलियन लौट रहा था तो अचानक उसके सीने में दर्द हुआ। आकर वो कुर्सी पर बैठ गया और दोस्त को हॉस्पिटल चलने को कहा। हॉस्पिटल ले जाते समय रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। जोधपुर के गोशाला क्रोड़ा संगम मैदान अरोड़ा-खत्री सुपर लीग के मैच के दौरान शनिवार को यह घटना हुई। क्रिकेटर की मौत के बाद आयोजकों ने लीग रद्द कर दिया। दरअसल, शनिवार को एमएमसी क्लब और रेड डेगून टीमों के बीच मैच हो रहा था। एमएमसी क्लब की ओर से मकरना मोहल्ला, जोधपुर निवासी नीरज अरोड़ा (4०) पुत्र जगदीश अरोड़ा बैटिंग करने उतरे।

नीरज अच्छी बैटिंग के बाद आउट हो गए। वे जब पैवेलियन आ रहे थे तो उनके सीने में दर्द उठा।

वे कुर्सी पर आकर बैठ गए और दोस्तों को पानी पिलाने के लिए कहा। पानी पीकर दोस्त सुशील से बोले कि सीने में दर्द हो रहा है, हॉस्पिटल चलते हैं।

नीरज को एक साल पहले भी हार्ट अटैक आया था। इसलिए दोस्त ने उन्हें तुरंत कार में बिठाया और मथुरा दास माथुर हॉस्पिटल के लिए रवाना हो गए, लेकिन 2 मिनट बाद रास्ते में नीरज को एक उल्टी हुई। आयोजक व दोस्तों ने सीपीआर भी दी, लेकिन नाकाम रहे। हॉस्पिटल में डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। लीग आयोजक रोहित अरोड़ा ने बताया कि नीरज परिवार में अपनी मां के साथ रहते हैं। उनकी 2 विवाहित बहनें हैं। पिता के निधन के बाद नीरज ने घासमंडी में अपनी नमकीन की दुकान का कारोबार संभाला। क्रिकेट के शौक के चलते वे हर रविवार दोस्तों के संग खेलने जाते थे।

13 वर्ष पुराने हत्या के मामले में वांछित स्थाई वारंटी गिरफ्तार

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ थाना अंतगत लगभग 13 वर्ष पुराने हत्या के मामले गिरफ्तार आरोपी की ओर से जमानत जप्त कर फरार होने के मामले में रविवार को राजगढ थाना पुलिस ने फरार वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। शाम पांच बजे दी जानकारी में थानाधिकारी पुष्येन्द्र झाझडिया ने बताया कि जमानत जप्त के बाद फरार चल रहे वांछित स्थाई वारंटी मनीष उर्फ लोडिया पुत्र प्रकाश चन्द उम्र 4० साल निवासी गंगौर को गांव डोकवा के पास से गिरफ्तार किया गया है।

उन्होंने बताया कि कार्यवाही में कास्टेबल सन्दीप कुमार तथा राजेन्द्र कुमार ने आरोपी को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई। गौरतलब है 06 अक्टूबर 11 को रेशमा देवी पत्नी स्व. राम सिंह मेघवाल निवासी बागडवा ने मामला दर्ज करवाकर बताया कि 03 अक्टूबर 2०11 को वह तथा उसका पुत्र सुनील अपने घरेलू काम से गांव हरपाल आये थे, तब उसके पुत्र के पास फोन आया तो उसने कहा कि मैं उसे राजगढ जाना पडेगा, यह कहकर वह राजगढ आ गया, लेकिन शाम को घर नहीं आया। सुबह उसने गांव में चर्चा

- हत्या के मामले में जमानत जप्त कर फरार हुए आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार**

- 13 साल से फरार ओर पुलिस थाने का वांछित था आरोपी**

सुनी कि राजगढ होस्पिटल में एक अज्ञात लडके का शव पडा हुआ है। जिसका पता करने के लिए वह अपने जेट मदन लाल को साथ लेकर राजगढ आई तथा शव को देखा तो उसके पुत्र सुनील का शव था। दर्ज मामले में बताया कि उनको गांव के सतावाल आदि से हत्या के एक मामले में रंजिश चलती है, तथा इस रंजिश के कारण सतपाल व राजकुमार, दुर्लौचन्द व नरेन्द्र मेघवाल आदि उसके घर आकर धमकियां दिया करते थे कि मौका मिलते ही तुम्हारे पुत्र सुनील को खत्म करेंगे। आरोप लगाया गया था कि उक्त चारों ने षडयंत्रपूर्वक उसके पुत्र सुनील की हत्या की है या करवाई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर

जांच की थी तथा आरोपी मनीष उर्फ लोडिया को गिरफ्तार किया था। तथ मामले में आरोपी की जमानत हो गई, लेकिन जमानत जप्त कर आरोपी फरार हो गया था। जिसके बाद से लगातार आरोपी की तलाश जारी थी।

तन्वी जैन को मिला स्वर्ण पदक

जयपुर। एल.एल.बी. में अध्ययनरत बड़जात्या परिवार सवाईमाधोपुर की छात्रा तन्वी जैन सुपुत्री निर्मल बड़जात्या सर्राफ ने जेईसीआरसी द्वारा आयोजित 8वें दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तन्वी की इस उपलब्धि से न केवल परिवार का, समाज का बल्कि सवाईमाधोपुर क्षेत्र का मान बढ़ाया है। इस सफलता का श्रेय तन्वी ने अपनी मां आरती जैन सहित परिवर्जनों व गुरुजनों को दिया है। जो परिवार सामान्य स्नातक की डिग्री से आगे नहीं बढ़ पाया था, अब नई पीढ़ी में इसी परिवार से डॉक्टर, सीए, एमबीए आदि एलएलबी गोल्ड मेडलिस्ट बनकर प्रोफेशनल कार्स करते हुए प्रगतिरत है।

राजधानी जयपुर में चोरों ने 5 मकान और एक मंदिर से नकदी-जेवरात चुराए

- जवाहर नगर, जामडोली, मुहाना, मानसरोवर और शास्त्री नगर इलाके में हुई वारदातें**

कि वह परिवार के साथ बाहर गया था पीछे से चोर मकान का ताला तोड़कर अंदर घुसे और घर से जेवरात व नगदी ले गए। घटना 2 जनवरी की है। घटना का पता पीडित को परिवार के साथ वापस लौटने पर लगा। इस पर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर साक्ष्य लेकर जांच शुरू कर दी है।

तीसरी घटना में नारायण वाटिका निवासी विपुल वर्मा ने कानोता थाने में मामला दर्ज करवाया कि वह परिवार के साथ बाहर गया था पीछे से चोर

मकान का ताला तोड़कर अंदर घुसे और अलमारी से नगदी व जेवरात ले गए। घटना 2 जनवरी की है। घटना का पता

भीलवाड़ा में एमओयू समीक्षा बैठक आयोजित

भीलवाड़ा। जिले में 1०0 करोड से लेकर 1०00 करोड और 1०00 करोड से अधिक निवेश करने वाले एमओयू की समीक्षा बैठक जिला कलक्टर नमित मेहता की अध्यक्षता में जिला कलक्टर

कार्यालय के सभागार में आयोजित की गई। इस बैठक में "राज्जिण राजस्थान" योजना के तहत जिले में होने वाले विभिन्न निवेश परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा की गई।

बैठक में जिला कलक्टर ने निवेशकों से विस्तार से चर्चा की और उनके द्वारा किए गए एमओयू को धरातल पर लाान करने में आ रही समस्याओं पर विचार विमर्श किया। इसमें भूमि आवंटन, विभिन्न विभागों से संबंधित कार्यवाही, तथा अन्य समस्याओं का समाधान कैसे किया जाए, इस पर चर्चा की गई। जिला कलक्टर ने संबंधित विभागों को निर्देशित किया कि वे इन एमओयू से जुड़े मामलों की निरंतर निगरानी करें और इनकी प्रगति पर फॉलोअप करें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे उद्योगों की समस्याओं का नियमानुसार और त्वरित निस्तारण करें। जिला कलक्टर ने यह भी कहा कि जो उद्यमी अपनी परियोजना के लिए भूमि की आवश्यकता रखते हैं, वे औद्योगिक

क्षेत्रों का निरीक्षण करें और भूमि आवंटन के लिए कार्यालय, भीलवाड़ा में आवेदन करें। यदि भूमि पहले से चिन्हित की गई है, तो इसके कवर्जन के लिए आवेदन करें ताकि त्वरित कार्रवाई हो सके। नगर विकास न्यास के सचिव ने निवेशकों और उद्योगों से अपील की कि वे अपनी वर्तमान निवेश, उत्पादन और इकाईयों की जानकारी के साथ, बैंक अपरेबल, डीपीआर उपलब्ध के साथ आवेदन करें

, ताकि भूमि की सही आवश्यकता का परीक्षण किया जा सके और भूमि आवंटन की कार्यवाही को गति दी जा सके। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर ने एमओयू की स्थिति, समस्याओं तथा प्रशासन की ओर से सहयोग के बारे में जानकारी ली। साथ ही, उद्योगों को आत्स्वस्त किया गया कि प्रशासन उनकी परियोजनाओं को धरातल पर लाने के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगा। महाप्रबंधक श्री के.के. मीना ने राउपस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2०24, "एक जिला, एक उत्पाद" नीति, नीति-2०24 और निर्यात प्रोत्साहन नीति के बारे में जानकारी दी। इस बैठक में सुविधा रिपर्स, चारभुजा इस्पत इंडिया लिमिटेड, केयरजोन एटोकैम, मान रिन्यूएबल, शारदा ग्लोबल प्रॉ.लि.,

संस्थान, अर्नेस्ट फॉर्मस प्रां.लि. के प्रतिनिधियों सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी जैसे एवीवीएनएल, रीको, प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, कृषि, ओएसडी यूआईटी, तकनीकी शिक्षा, संस्कृत शिक्षा और सीएम्एचओ उपस्थित रहे।

युवक से लूटपाट

जयपुर। बस्सी इलाके में कार सवार दो बदमाशों ने बाइक सवार युवक को रोका और मारपीट कर नकदी व अन्य सामान लूट कर फरार हो गए। पुलिस के अनुसार दुलारावजी निवासी सचिन कुमार शर्मा बाइक से अपने घर लौट रहा था। धामस्या में सड़क पर खड़े कार सवार दो बदमाशों ने उसे रोका और मारपीट कर उससे मोबाइल, कपड़े, बैग, इंडर बडर्स, 2000 रूपए, 3 डेबिट कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस सहित अन्य सामान छीनकर फरार हो गए। घटना 28 दिसम्बर की रात की है। इस पर पीडित ने अगले दिन थाने पहुंच कर मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस मामले में पुलिस पीडित द्वारा बताया गए हुलिए के आधार पर बदमाशों की तलाश कर रही है।

टांके लगवाने के लिए बच्ची को 4० किमी दूर भरतपुर ले गए परिजन



घायल बच्ची गुगु।

गुगु दोपहर को खेलते समय अचानक गिर गई, जिससे उसकी नाक और आंख में चोट आ गई।

इलाज के लिए जब उसे रुदावल चिकित्सालय ले जाया गया तो वहां मौजूद नर्सिंगकर्मी एवं चिकित्सक ने बच्ची को देखकर कहा कि हमारे पास टांके लगाने के लिए सुई धागा नहीं है। इसलिए आप बच्ची को भरतपुर के आरबीएम अस्पताल ले जाओ। रुदावल में बच्ची को प्राथमिक उपचार तक नहीं दिया गया। इसके बाद परिजन बच्ची को लेकर आरबीएम अस्पताल पहुंचे, जहां बच्ची का इलाज किया गया। पीड़ित ने बताया कि बच्ची को भरतपुर आरबीएम अस्पताल ले जाने के लिए रुदावल अस्पताल की तरफ से एम्बुलेंस की व्यवस्था भी नहीं करवाई गई। जिस पर बच्ची को किराए की गाड़ी से उसे आरबीएम अस्पताल लेकर गए। पीड़ित ने बताया कि उसने इस मामले की शिकायत स्थानीय विधायक, कलेक्टर, एडोएम

एवं बीसीएमओ से भी की है।

चिकित्सा विभाग में लापरवाही अब आम बात-चिकित्सालयों में लापरवाही इस आम बात होती जा रही है, दो दिन पूर्व बंशी पहाड़पुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का उपखण्ड अधिकारी रूपवास विष्णु बंसल की ओर से निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण के दौरान चिकित्सक अनुपस्थित पाए गए। वहीं चिकित्सालय के दवाई के स्टोर रूम में गंदगी एवं गुटखा के पीक तक पाए गए। हाथिरी रजिस्टर में कार्मिक की आगे की तारीख तक के हस्ताक्षर किए हुए थे। इस मामले को लेकर रूपवास ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर लखन चौधरी का कहना है कि चिकित्साकर्मियों की इस तरह की लापरवाही हुई है तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।



कोहली भारतीय टीम में रहने के हकदार नहीं, गलतियाँ सुधारने पर मेहनत नहीं की। उन्होंने अपनी तकनीकी कमियों को सुधारने के लिये ना तो घरेलू क्रिकेट खेली और ना ही मेहनत की।

—इरफान पटान

पूर्व भारतीय गेंदबाज, विराट कोहली की खराब फॉर्म के बारे में बोलते हुए।

हमने ऑस्ट्रेलिया को कड़ी टक्कर दी, अनुभव खिलाड़ियों को भविष्य में आयेगा काम

सिडनी, 5 जनवरी। भारत को बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया के हाथों मिली 3-1 से हार को लेकर जसप्रीत बुमराह ने कहा कि हमने ऑस्ट्रेलिया को कड़ी टक्कर दी। उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया वे जीत के हकदार



थे इस दौर का अनुभव भारतीय खिलाड़ियों को भविष्य में काम आएगा। मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में बुमराह ने कहा, हम एक गेंदबाज कम थे इसलिए अन्य गेंदबाजों के ऊपर अतिरिक्त जिम्मेदारी थी। हमें भरोसा बनाये रखना था। पहली पारी में भी गेंदबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया था। हमने इस सीरीज में कड़ी टक्कर दी, आज भी हम खेल बने हुए थे। इस सीरीज से काफी कुछ सीखने को मिला है। हमारी युवा खिलाड़ी ने जो कुछ सीखा है इसका लाभ भी भविष्य में मिलेगा। ऑस्ट्रेलिया इस जीत का हकदार है और उन्होंने इस सीरीज में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। हम दोबारा एकत्रित होंगे और आगे का समय तय करेंगे।

‘बंगाल की खाड़ी में 150 किमी. की तैराकी के लिए गोली श्यामला की सराहना’

हैदराबाद, 5 जनवरी। हरियाणा के राज्यपाल बंडारा दत्तात्रेय ने आंध्र प्रदेश के काकीनाडा जिले के समरलाकोटा की मूल निवासी व तैराक गोली श्यामला को बंगाल की खाड़ी में लगभग



150 किलोमीटर की तैराकी करने की असाधारण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई दी है। गोतलब है कि श्यामला ने विशालखापतमन से काकीनाडा तक की यह असाधारण यात्रा एक सप्ताह में पूरी की। दत्तात्रेय ने उनको बहादुरी और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा की और उन्हें सभी उम्र के लोगों के लिए एक प्रेरणा तथा रोल मॉडल बताया। उन्होंने समुद्र में तैराकी के प्रति उनके जुनून पर प्रकाश डाला, जो एक शौक के रूप में शुरू हुआ था और बाधाओं को तोड़ने तथा यह साबित करने के लिए उनकी सराहना की कि साहसिक कार्य के लिए उम्र को बाधा नहीं है। राज्यपाल ने श्यामला की पिछली उपलब्धियों का भी उल्लेख किया, जिसमें राम सेतु के पास चुनौतीपूर्ण तैराकी और श्रीलंका एवं लक्षद्वीप में उनके कौशल का प्रदर्शन शामिल है। उन्होंने उम्मीद जताई कि वह भविष्य में और भी साहसिक कारनामे करती रहेंगी।

सब-जूनियर राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता : राजस्थान ने जीते दो रजत पदक

जयपुर, 5 जनवरी। सब-जूनियर राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतियोगिता के दूसरे दिन रिक्त कैटेगरी के फाइनल मुकाबले खेले गए। आज के फाइनल मुकाबलों में राजस्थान की टीम ने



शानदार प्रदर्शन करते हुए दो रजत पदक अपने नाम किए। मुख्य परिणाम: मिक्स्ड टीम इवेंट: राजस्थान की टीम ने फाइनल में जोरदार मुकाबला किया, लेकिन उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा। व्यक्तिगत छात्रा वर्ग: प्रॉजल ठेलिया ने व्यक्तिगत श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता। विजेता खिलाड़ियों को मेडल से सम्मानित किया गया। फाइनल मुकाबले में विशेष आकर्षण का केंद्र रहा प्रॉडियम सेटअप, जिसे राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बहुत कम देखा जाता है। राजस्थान तीरंदाजी संघ के महासचिव सुरेंद्र सिंह गुर्जर ने बताया कि मेडल सेरेमनी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के चिकित्सा मंत्री श्री बलवंत सिंह थे। उन्होंने अपने उद्घोषण में कहा, "ऐसे आयोजन से प्रदेश की प्रतिभाओं को उभरने का मौका मिलता है और नई पीढ़ी को खेलों में आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त होते हैं।" समारोह की अध्यक्षता राजस्थान तीरंदाजी संघ के अध्यक्ष के. के. जादव ने की। उन्होंने विजेता खिलाड़ियों को बधाई देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम के दौरान परमेश्वरी चौधरी, भंवर लाल व्यास, दिगेश कुमारवत, और गंगा सिंह गुर्जर सहित खेल जगत् से जुड़े कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आयोजन समिति से जुड़े अनिल जोशी ने जानकारी दी कि लक्ष से कंपाउंड कैटेगरी के मुकाबले शुरू होंगे। प्रतियोगिता 3 से 10 जनवरी 2025 तक आयोजित हो रही है, जिसमें देशभर से युवा तीरंदाज भाग ले रहे हैं।

भारत को छह विकेट से हराकर ऑस्ट्रेलिया डब्ल्यूटीसी फाइनल में

सिडनी, 5 जनवरी। स्कॉट बोलैंड (छह विकेट) के बाद उस्मान ख्वाजा (41), वो वेक्टर (नाबाद 39) और ट्रेविस हेड (34) की शानदार जुझारू पारियों की बदौलत ऑस्ट्रेलिया रविवार को पांचवें और अखिरी टेस्ट मैच में भारत को छह विकेट से हरा कर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में पहुंच गई है।

आज यहां भारत के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पीठ की जकड़न के कारण ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में गेंदबाजी नहीं करने उतरे और ऑस्ट्रेलिया ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पांचवें टेस्ट मैच में जीत दर्ज करते हुए बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी भी 3-1 से अपने नाम कर ली है। ऑस्ट्रेलिया ने 10 साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को फिर से हासिल की है। स्कॉट बोलैंड "प्लेयर ऑफ द मैच" रहे वहीं जसप्रीत बुमराह को "प्लेयर ऑफ द सीरीज" से नवाजा गया। 162 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया के लिए सैम कॉन्ट्यास और उस्मान ख्वाजा की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 39 रन जोड़ा। चौथे ओवर में प्रसिद्ध कृष्णा ने कॉस्टान (2) को आउट कर भारत को पहली सफलता दिलाई।



इसके बाद मानस लाबुशेन (छह) और स्टीव स्मिथ (चार) को भी प्रसिद्ध कृष्णा ने अपना शिकार बनाया। ऑस्ट्रेलिया का चौथा विकेट उस्मान ख्वाजा (41) के रूप में 104 के स्कोर पर गिरा। उन्हें मोहम्मद सिराज ने आउट किया। इसके बाद ट्रेविस हेड (नाबाद 34) और वो वेक्टर (नाबाद 39) ने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया। ऑस्ट्रेलिया को 27वें ओवर में चार विकेट पर 162 रन बनाकर यह मुकाबला छह विकेट से जीत लिया।

भारत को अंतर प्रसिद्ध कृष्णा ने तीन विकेट लिये। एक खिलाड़ी को मोहम्मद सिराज ने आउट किया। इससे पहले भारत

ने कल के छह विकेट पर 141 रन से आगे खेलना शुरू किया। आज सुबह के सत्र में पेट कॉर्मिस ने रवींद्र जडेजा (13) को आउट कर ऑस्ट्रेलिया का दिन की पहली सफलता दिलाई। इसके बाद संघर्ष कर रहे वॉशिंगटन सुंदर (12) को पेट कॉर्मिस ने बॉल्ड आउट कर पवेलियन भेज दिया। मोहम्मद सिराज (चार) और जसप्रीत बुमराह (शून्य) स्कॉट बोलैंड का शिकार बने।

भारत ने के स्कोर में मात्र 16 रन जोड़ कर अपने चार विकेट गवां दिये और पूरी टीम 39.5 ओवरों में 157 रन पर सिमट गई। ऑस्ट्रेलिया की ओर स्कॉट बोलैंड ने छह विकेट लिये।

सुशीला मीणा को सम्मानित कर आरसीए ने गोद लिया

जयपुर में प्रशिक्षण के साथ शिक्षा, आवास व मूलभूत दैनिक सुविधाओं की व्यवस्था भी आरसीए करेगा

जयपुर, 5 जनवरी। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीप बिहाणी के अनुसार राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के मार्गदर्शन व सहयोग से आरसीए एडहॉक कमेटी राजस्थान में खेल के विकास व उत्थान के लिए गहन प्रयासरत है व उसका हमेशा से प्रयास रहा है की राज्य के कोने कोने से प्रतिभावान खिलाड़ियों की प्रतिभा को पहचान उन्हें उचित अवसर प्रदान किया जाये।

इसी कड़ी में आज राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी ने राज्य के प्रतापगढ़ जिले की प्रतिभावान युवा महिला खिलाड़ी सुशीला मीणा के भविष्य को उज्ज्वल बनाने हेतु आरसीए द्वारा राज्य के केबिनेट मंत्री राज्य वर्धन सिंह राठौर, जोगाराम पटेल व हेमंत मीणा की उपस्थिति में आयोजित सम्मान समारोह में सुशीला मीणा को सम्मानित किया व आरसीए ने सुशीला मीणा को गोद लेकर जयपुर में अपनी देखरेख में प्रशिक्षित कोचों की निगरानी में विशेष प्रशिक्षण सहित उसके आवास व अन्य मूलभूत सुविधाओं की



जयदीप बिहाणी के अनुसार भारत रत्न व महान क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर द्वारा राज्य (प्रतापगढ़) की युवा प्रतिभावान महिला खिलाड़ी के गेंदबाजी एक्शन व प्रतिभा की प्रशंसा के बाद आरसीए एडहॉक कमेटी, चित्तौड़गढ़ सांसद सी पी जोशी, प्रतापगढ़ जिला क्रिकेट संघ अध्यक्ष व केबिनेट मंत्री हेमंत मीणा, प्रतापगढ़ जिला क्रिकेट संघ सचिव, पिंगेश पोरवाल ने सुशीला मीणा की जबरदस्त प्रतिभा के सम्बन्ध में मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा को अवगत कराया व मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के निर्देशानुसार आरसीए द्वारा आज युवा

महिला खिलाड़ी के भविष्य को संवारने हेतु विशेष प्रशिक्षण हेतु गोद लिया गया। जयदीप बिहाणी ने बताया की आज दोपहर 12:30 आरसीए अकादमी पर आयोजित सम्मान समारोह में राज्य के खेल मंत्री (केबिनेट) कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर, कानून मंत्री (केबिनेट) जोगाराम पटेल, प्रतापगढ़ जिला क्रिकेट संघ अध्यक्ष व केबिनेट मंत्री हेमंत मीणा, आरसीए एडहॉक कमेटी, प्रतापगढ़ जिला क्रिकेट संघ सचिव पिंगेश पोरवाल एवं समस्त जिला क्रिकेट संघों के प्रतिनिधि व सुशीला मीणा के परिजन मौजूद रहे। सम्मान समारोह का संचालन प्रतापगढ़

विजय हजारे ट्रॉफी में सिविकम ने राजस्थान को रोमांचक मैच में हराया

जयपुर, 5 जनवरी। बीसीसीआई की मुंबई में खेली जा रही राष्ट्रिय विजय हजारे एक दिवसीय ट्रॉफी में आज सिविकम ने राजस्थान को रोमांचक मैच में 6 रनों से हराया। सिविकम पारी 275 /5 टीम के लिए पार्थ 80 व आशीष थापा 73 रनों का योगदान दिया। राजस्थान के गेंदबाज राहुल चाहर 77 /2 , खलील अहमद, अजय कुकना , मानव सुधार प्रत्येक 1-1 विकेट प्राप्त किये।

लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान टीम कप्तान मानव सुधार व अजय कुकनाके साहसी अर्धशतकीय पारियों के बावजूद रोमांचक मैच में 269 रनों के स्कोर पर आल आउट हो गयी। टीम के लिए मानव सुधार 57, अजय कुकना 56, राजकुमार सैनी 49, कार्तिक शर्मा 46,

शुभम गढ़वाल 30 व सर्परित जोशी 18 रनों का योगदान दिया। सिविकम के गेंदबाज अंकुश 35 /4 विकेट प्राप्त किये। अंडर 23 टी20 ट्रॉफी में राजस्थान ने बिहार को हराया राजस्थान की जीत में उषा परेरिया, सिद्धी शर्मा व शानू चमकी बीसीसीआई की राष्ट्रीय महिला अंडर 23 टी 20 ट्रॉफी के आज खेलें गए राजस्थान - बिहार मैच में राजस्थान ने बिहार को 5 विकेट से हराया। बिहार पारी 44 आल आउट राजस्थान की गेंदबाज उषा परेरिया 7/4, शानू 8/2, सिद्धी शर्मा 13/2 विकेट प्राप्त किये। राजस्थान पारी 45 /5, टीम के लिए कृतिका 22, सिद्धीशर्मा नाबाद 5 व दीक्षा नाबाद 4 रनों का योगदान दिया।

न्यूजीलैंड ने श्रीलंका को पहले वनडे मैच में नौ विकेट से हराया



वेलिंगटन, 5 जनवरी। मैट हेनरी (चार विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद विल यंग के शानदार प्रदर्शन के बाद विल यंग (नाबाद 90) रनों की बेहतरीन पारी के दम पर न्यूजीलैंड ने रविवार को पहले एकदिवसीय मैच में श्रीलंका को 142 गेंदों से जीत कर हरा दिया। इसी के साथ न्यूजीलैंड ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। 19 रन देकर चार विकेट झटकने वाले न्यूजीलैंड के मैट हेनरी को "प्लेयर ऑफ

द मैच" से नवाजा गया। श्रीलंका के 178 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड को विल यंग और रचिन रविंद्र की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 93 रन जोड़ा। 13वें ओवर में चार्मिंदु विक्रमासिंघे ने रचिन रविंद्र को हसरंगा के हाथों कैच आउट कराकर इस साझेदारी को तोड़ा। रचिन रविंद्र ने 36 गेंदों में छह चौके और एक छक्का लगाते हुए (45) रनों

की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मार्क चैपमैन ने विल यंग के साथ शानदार बल्लेबाजी का मुजाहिदात हुए दूसरे विकेट लिए अजिंजित 87 जोड़कर अपनी टीम को महज 26.2 ओवरों में 180 रन बनाकर नौ विकेट से जीत दिला दी। विल यंग ने 86 गेंदों में (90) रनों का विकेट चैपमैन 36 गेंदों में (29) रन बनाकर नाबाद रहे। श्रीलंका की ओर से एकमात्र विकेट चार्मिंदु विक्रमासिंघे को मिला।

10 मीटर पिस्टल ईवेंट में राजस्थान के खिलाड़ियों ने किये पदक अपने नाम

जयपुर, 5 जनवरी। डा. करणीसिंह शूटिंग रेंज तुगलकाबाद नई दिल्ली पर आयोजित 67वें नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता राईफल 2024 में 10 मीटर



पिस्टल व्यक्तिगत व जूनियर पुरुष मैन केटीगरी में आकाश भारद्वाज, आमप्रकाश मिठारवाल व योगेश कुमार की जोड़ी ने सिल्वर पदक अपने नाम किया। 10 मीटर पिस्टल जूनियर मैन सिविलियन चैंपियनशिप में मयंक चौधरी, आर्यन कुमार व अंशुल को जोड़ी ने जीता कांस्य पदक एवं 10 मीटर पिस्टल जूनियर मैन नेशनल चैंपियनशिप टीम केटीगरी में अमित शर्मा, सन्दीप बिस्नोई, व उमेश चौधरी की जोड़ी ने भी कांस्य पदक अपने नाम किया।

आज का खिलाड़ी

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने अपने और एलेन बॉर्डर के नाम पर दी जाने वाली ट्रॉफी आस्ट्रेलियाई टीम को प्रदान करने के लिये बुलाये नहीं जाने पर नाराजगी जताई है। आस्ट्रेलिया ने पांचवें और आखिरी टेस्ट में भारत को छह विकेट से हराकर दस साल में पहली बार बॉर्डर गावस्कर

क्या आप जानते हैं?... भारत टी-20 इतिहास में एक कैलेंडर वर्ष में 200 छक्के लगाने वाली पहली टीम बन गई, ऐसा उसने 2024 में किया।

सुनील गावस्कर

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने अपने और एलेन बॉर्डर के नाम पर दी जाने वाली ट्रॉफी आस्ट्रेलियाई टीम को प्रदान करने के लिये बुलाये नहीं जाने पर नाराजगी जताई है। आस्ट्रेलिया ने पांचवें और आखिरी टेस्ट में भारत को छह विकेट से हराकर दस साल में पहली बार बॉर्डर गावस्कर

क्या आप जानते हैं?... भारत टी-20 इतिहास में एक कैलेंडर वर्ष में 200 छक्के लगाने वाली पहली टीम बन गई, ऐसा उसने 2024 में किया।

खो-खो विश्वकप के लिए विदेशी टीमों को प्रशिक्षित कर रहे भारतीय कोच

नई दिल्ली, 5 जनवरी। खो-खो विश्वकप में भाग लेने वाली सभी विदेशी टीमों को भारतीय कोच प्रशिक्षित कर रहे हैं। खो-खो फेडरेशन के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने रविवार को बताया कि आयोजन समिति ने खो खो विश्वकप में हिस्सा लेने वाले एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका से संबंधित देशों की खो खो टीमों को फिटनेस, खेल नियमों और नवीनतम खेल तकनीकों के लिए प्रशिक्षित भारतीय कोचों को नियुक्त किया गया है। उन्होंने कहा यह कोच अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अर्जेंटीना, दक्षिण कोरिया, पोलैंड, हॉलैंड, पेरू, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, मलेशिया, भूटान और नेपाल देशों में तैनात किये गए हैं। उन्होंने कहा कि इन कोचों के लिए एयर टिकट, रहने-खाने आदि की सभी व्यवस्था खो खो वर्ल्ड कप आयोजन समिति द्वारा की गई है हालांकि कुछ देशों की खो खो फेडरेशनों द्वारा इन कोचों को स्थानीय सुविधाएं या ठहरने की सुविधा प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय खो खो फेडरेशन ने खिलाड़ियों और समर्थकों के प्रशिक्षण और कैम्पेसिटी बिल्डिंग करने के लिए पर्याप्त बजट प्रावधान किया है। उन्होंने कहा क्वालिफाइड कोचों को नवीनतम अंतरराष्ट्रीय खेल नियमों, स्पॉट्स रेगुलेशन, तकनीकी आदि के बारे में निर्देश दिए हैं। आयोजन समिति प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है।

गंभीर ने रोहित और विराट का किया बचाव



सिडनी, 5 जनवरी। भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली का बचाव करते हुए खेल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और निर्यात को सराहना की। उन्होंने कहा कि अभी उनमें काफी भूख शेष है और भविष्य में वे जो भी फैसला लेंगे वह भारतीय क्रिकेट के हित में होगा। मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में गंभीर ने कहा, मैं किसी खिलाड़ी के भविष्य पर बात नहीं कर सकता। यह उनके ऊपर है। हां, मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि उन दोनों में अभी भी और हम जानते हैं कि पांच महीने का समय लंबा होता है। इसलिए हमें इंतजार करना चाहिए। लेकिन जो भी होगा वो सभी जानते हैं वह जो भी फैसला लेंगे वह भारतीय क्रिकेट के हित में होगा।

गंभीर ने कहा, पहली बात तो यह कि हर खिलाड़ी अपने खेल को समझता है और उसे पता होता है कि उसके प्रति कितनी भूख है। यह बात केवल खेल ही नहीं किसी भी पेशे में लागू होती है। मायने यह रखता है कि आपके अंदर कितना खज्ना है, कितनी भूख है। आपके योगदान से टीम को फायदा पहुंच पा रहा है या नहीं।

क्योंकि अंत में यह मेरी या आपकी नहीं बल्कि देश की है। मुझे विश्वास है कि हमारी टीम में ईमानदार खिलाड़ी हैं जो यह जानते हैं कि उनके भीतर कितनी भूख बची हुई है। उन्होंने आखिर टेस्ट में रोहित के बाहर बैठने के फैसला का बचाव करते हुए कहा, जब चीजें ठीक से काम नहीं कर रही हों तो उसे स्वीकार करना और टीम के हित के लिए पीछे हट जाना बहुत साहस की बात है।

उन्होंने कहा, खेल में काफी चीजें बदलती हैं, लोग बदलते हैं, फॉर्म बदलती हैं। और हम जानते हैं कि पांच महीने का समय लंबा होता है। इसलिए हमें इंतजार करना चाहिए। लेकिन जो भी होगा वो भारतीय क्रिकेट के हित में होगा। उन्होंने कहा, जहां तक मेरा सवाल है तो मैं मेरी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि मैं सबसे समान भाव से पेश आऊं। अगर मैं और उसे पता होता है कि उसके प्रति विशेष प्रेम जताऊंगा तो यह अपने कर्तव्य के साथ बेईमानी होगी। फिर चाहे वह किसी खिलाड़ी ने पर्दापन नहीं किया हो या किसी ने 100 टेस्ट मैच खेले हैं, मुझे हर खिलाड़ी के साथ समान भाव से पेश आना होगा।

क्रिकेट के भगवान सचिव तेंदुलकर मेरे लिए भगवान समान : सुशीला मीणा



जयपुर, 5 जनवरी। हालिया सोशल मीडिया से चर्चा में आई क्रिकेटर सुशीला मीणा को आज जयपुर में सम्मानित किया गया। सुशीला मीणा को राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन ने गोद लिया है और अब वे जयपुर में क्रिकेट की शौकीनों को और भी अधिक सीखेंगी। राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन ने ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से मुझे गोद लिया है। एडहॉक कमेटी के संयोजक विधायक जयदीप बिहाणी ने बताया कि राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा मेरी पढ़ाई, कॉचिंग और खेल से जुड़ा सारा खर्च वहन करेगा। यह कदम प्रदेश की अन्य प्रतिभाओं के लिए भी एक प्रेरणा साबित होगा। मैं मुजबूत, खेलमन्त्री, आरसीए के साथ सभी का आभार करती हूँ जिन्होंने मुझे ये सम्मान दिया है। और मैं सबसे ज्यादा सचिन तेंदुलकर को अहसानमंद हूँ जिन्होंने मेरे वीडियो को पढ़कर किया। उन्ही के कारण मुझे आज क्रिकेट में पहचान बनी। मैं जिंदगीभर मेरे सचिन भगवान की आभारी रहूँगी। मैं राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के धरियावाड तहसील के गांव

रामेर तालाब पिपरिया की रहने वाली हूँ। मैं पांचवी कक्षा की छात्रा हूँ। मैं क्रिकेट की शौकीन हूँ। मैं एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखती हूँ। माता-पिता मजदूरी और खेती से जीविका चलाते हैं। मेरे पिता का नाम रतनलाल पगारी और मां शांति बाई मीणा हैं। मैं स्कूल स्तर पर होने वाली क्रिकेट प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेती रहती हूँ। सुशीला में क्रिकेट की समझ कोच इक्विलाल के कारण आई। वह नहीं जानती कि तेंदुलकर कौन हैं। उनके पास न तो टीवी है और न ही ऐसा कोई माध्यम जिससे वह क्रिकेट देख सकें। सुशीला ने क्रिकेट के बारे में सिर्फ अपने कोच से सुना जो उसे गेंदबाजी सिखाते हैं।

आईआईएस, यूडब्ल्यूडब्ल्यू के साथ अंतराष्ट्रीय कुश्ती शिविर का करेगा आयोजन

बेल्लारी (कर्नाटक), 5 जनवरी। इस्प्यार इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट (आईआईएस) यूनाटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) के सहयोग से महिला पहलवानों के लिए 15 से 30 जनवरी तक अंतराष्ट्रीय कुश्ती शिविर का आयोजन करेगा। आईआईएस ने रविवार को यूनाटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) के साथ मिलकर महिला पहलवानों के लिए अपनी तरह के पहले अंतरराष्ट्रीय कुश्ती शिविर आयोजित करने की घोषणा की। भारत में कुश्ती को बढ़ावा देने के होने वाले इस शिविर में एस्टोनिया, मॉरीशस, कजाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, मंगोलिया, जॉर्डन, किर्गिस्तान और नार्मीबिया सहित आठ से अधिक देशों के शीर्ष 30 पहलवान और आठ कोच हिस्सा लेंगे। इरमैं मदीना कुआनिशबेक (मंगोलिया), अरुके कादिरबेक काजी (किर्गिस्तान) और लिसेट बोएटर (एस्टोनिया) जैसे प्रसिद्ध पहलवान शिविर में भाग लेंगे।

सबालेंका ने कुडरमेतोवा को हराकर जीता ब्रिस्बेन इंटरनेशनल का खिताब

लंदन, 5 जनवरी। आर्याना सबालेंका ने रविवार को फाइनल मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए रूस की पौलिना कुडरमेतोवा को हराकर ब्रिस्बेन इंटरनेशनल का खिताब अपने नाम कर लिया है। आज यहां एक घंटे 47 मिनट में तक चले मुकाबले में बेलारूस की आर्याना सबालेंका, 6-2 से रूस की कुडरमेतोवा पर 4-6, 6-3, 6-2 से जीत दर्ज की।

‘फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल’ की अगुवाई

नई दिल्ली, 5 जनवरी। केंद्रीय युवा मामलों एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री लॉ. मनसुख मांडविया ने आज गुजरात के पोरबंदर में अपने निर्वाचन क्षेत्र उपलेटा में ‘फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल’ की पहली की अगुवाई की।

क्रिकेट की बात को लेकर नांदू और बियानी में नोंकझोंक



जयपुर, 5 जनवरी। राजस्थान क्रिकेट एकेडमी में आज सुशीला मीणा के सम्मान समारोह के लिये एकेडमी पर एकत्रित हुए राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के पदाधिकारी जिनमें नागौर क्रिकेट जिले के सचिव राजेन्द्र नान्दू और एडहॉक कमेटी के कन्वीनर जयदीप बियानी के बीच क्रिकेट की बात को लेकर नोंकझोंक हो गई। राजेन्द्र नान्दू ने कहा कि मुझे से किसी ने पूछा कि राजस्थान में क्रिकेट के क्या हाल है? मैंने कहा कि क्रिकेट की क्या बात करे, क्रिकेट तो बर्बाद हो गया।



जिस पर जयदीप बियानी ने कहा कि मुझे बताओ कि किस तरह राजस्थान में क्रिकेट बर्बाद है? तब मैंने कहा कि यहां अधिकतर जिलों के सचिव आये हुए हैं, इन सभी को सब माध्यम हैं इन्हें बताने की जरूरत नहीं है। यहां पर कोई मीटिंग नहीं हो रही है। मैं सालभर बाद स्ट्रेडियम आया हूँ। बियानी ने कहा कि मैं एडहॉक कमेटी का कन्वीनर हूँ मुझे बताओ, अगर कैसे कह सकते हो की क्रिकेट बर्बाद है? मैंने जाने लगा तो पीछे से बियानी कहने लगे कि नान्दू को धक्के मारकर घर निकालो, तब मैं वही कुर्सी पर बैठ गया। मुझे किसी ने भी धक्के नहीं दिए। जब मैं वापस लौट रहा था तो बियानी ने मुझे अपशब्द कहे जो उन्हें शोभा नहीं देता है।

आज राइजिंग राजस्थान एम.ओ.यू. की समीक्षा करेंगे मुख्यमंत्री भजनलाल

मुख्यमंत्री स्तर पर पहली समीक्षा 1,000 करोड़ रूपए से अधिक निवेश वाले एम.ओ.यू. की होगी

जयपुर, 5 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के तहत हस्ताक्षरित हुए 1 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि वाले एमओयू के समर्थन के रूप से धरातल पर

■ कृषि, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, उद्योग व वाणिज्य, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, खनन, पर्यटन और नगरीय विकास व आवासन विभाग के 124 एम.ओ.यू. के क्रियान्वयन पर विभागीय अधिकारियों से रिपोर्ट ली जायेगी।

उतारने के लिए समीक्षा बैठक करेंगे। समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री कृषि, शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, उद्योग एवं वाणिज्य, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, खनन, पर्यटन और नगरीय विकास एवं आवासन विभाग के 124 एमओयू के क्रियान्वयन के संबंध में विभागीय अधिकारियों के साथ चर्चा करेंगे।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष में 9 से 11 दिसंबर तक आयोजित हुए राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट

समिट के तहत कुल 35 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू किए गए थे। जिसके बाद इन एमओयू के समर्थन एवं प्रभावी क्रियान्वयन के लिए मुख्यमंत्री ने त्रि-स्तरीय समीक्षा व्यवस्था की पहल की थी। इसी कड़ी

में मुख्यमंत्री स्तर पर एमओयू क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक आयोजित हो रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने प्रदेश के कारोबारी एवं व्यापारिक माहौल को निवेशकों के अनुरूप बनाने के लिए बड़े बदलाव किए हैं। प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना, नवीन औद्योगिक क्षेत्रों को भू-खण्ड आवंटन किए गए हैं। साथ ही, निवेश को बढ़ावा

देने के लिए राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2024 एवं अन्य 9 नई नीतियां भी जारी की गई हैं। राइजिंग राजस्थान समिट के तहत हुए निवेश



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

एमओयू को जमीन पर उतारने की प्रगति रिपोर्ट दिसंबर 2025 में प्रदेवावसियों के सामने प्रस्तुत की जाएगी।

मणिपुर: सेना व पुलिस के संयुक्त अभियान में हथियार व गोला बारूद बरामद

इंफाल, 05 जनवरी। भारतीय सेना ने मणिपुर पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर हथियारों और गोला-बारूद का बरामदी में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है।

कुल 42 हथियार, साथ ही एक बड़ी मात्रा में गोला-बारूद और युद्ध जैसे सामान को मणिपुर के पहाड़ी और घाटी क्षेत्रों में हुए अभियानों के दौरान जब्त किया गया। यह बरामदी कई जिलों में की गई, जिसमें इंफाल पश्चिम, चंदेल, थौबल, कंगपोकपी और चुराचंदपुर शामिल हैं।

रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने कोहिमा में बताया कि सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे से बचाने के लिए सुरक्षा बल इस तरह के ऑपरेशन चला रहे हैं। प्रवक्ता ने बताया कि मणिपुर में सुरक्षा बलों ने पहाड़ी और घाटी जिलों के संवेदनशील क्षेत्रों में ऑपरेशनों को तेज किया है, खोज अभियानों का संचालन कर रहे हैं और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय दबदबा सुनिश्चित कर रहे हैं।

चौबीस घंटे में यूक्रेन के 340 सैनिक मरे, 4 टैंक नष्ट

मांस्को, 05 जनवरी। रूसी रक्षा मंत्रालय ने रविवार को कहा कि यूक्रेन ने पिछले 24 घंटों में कुर्स्क दिशा में अपने 340 सैनिकों और चार टैंकों को खो दिया है। मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि पिछले 24 घंटों में, यूक्रेनी सशस्त्र बलों के 340 सैन्य कर्मियों की मौत हुई है। इसके साथ ही चार टैंक, पैदल सेना से लड़ने वाले तीन वाहन, चार बख्तरबंद कार्मिक वाहक, 12 बख्तरबंद लड़ाकू वाहन, एक बैराज वाहन, 20 वाहन और पांच मोटार नष्ट हो गए। कुल मिलाकर, कुर्स्क दिशा में लड़ाई के दौरान, यूक्रेन ने 49,010 से अधिक सैन्य कर्मियों, 273 टैंकों, पैदल सेना से लड़ने वाले 209 वाहनों, 153 बख्तरबंद कर्मियों के वाहक, 1,461 बख्तरबंद लड़ाकू वाहनों, 1,407 वाहनों, 340 तोपखाने के टुकड़ों, मल्टीपल लॉन्च रॉकेट सिस्टम के 44 लॉन्चरों को खोया है, जिसमें 13 हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम (हिमास) और छह एमएलआरएस, विमान भेदी मिसाइल प्रणालियों के 16 लॉन्चर, आठ परिवहन-लॉडिंग वाहन, 88 इलेक्ट्रॉनिक युद्ध स्टेशन, 13 कांटेनर-बैटरी रडार, चार वायु रक्षा रडार, इंजीनियरिंग और अन्य उपकरणों की 28 इकाइयों साथ ही 14 इंजीनियरिंग क्लियरिंग वाहन, एक माइन क्लियरिंग इस्टॉलेशन यूआर-77, सात बख्तरबंद मरम्मत एवं रिकवरी वाहन और एक कमांड और स्टाफ वाहन शामिल हैं।

अजमेर दरगाह में चढ़ाई गई सचिन पायलट की भेजी चादर

केन्द्रीय रक्षा मंत्री द्वारा भेजी चादर भी अजमेर शरीफ में चढ़ाई गई

अजमेर, 5 जनवरी (कांस)।

ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813 वें सालाना उर्स के मौके पर आज अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट की ओर से मजार शरीफ पर मखमली चादर एवं अकीदत के फूल पेश किये गए। इसी प्रकार केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की ओर से भेजी गई चादर व अकीदत के फूल मजार शरीफ पर पेश किए गए। चादर दरगाह कमेटी के पूर्व उपाध्यक्ष मुनवर खान लेकर आए।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव पायलट की चादर, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के सदस्य आबिद कागजी ने चढ़ाई। आबिद कागजी ने सर्किट हाउस एवं दरगाह में पायलट का संदेश पढ़ कर सुनाया। पायलट ने संदेश में कहा कि अजमेर दरगाह शरीफ में ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें उर्स के मुबारक के मौके पर पूरी दुनिया से जियारत के लिए आने

■ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा भेजी चादर दरगाह कमेटी के पूर्व उपाध्यक्ष मुनवर खान लेकर आये थे तथा पायलट की चादर प्रदेश कांग्रेस के अल्पसंख्यक विभाग के आबिद कागजी लेकर आये।

वाले जायरीनों को मैं तहे दिल से मुबारकबाद पेश करता हूँ। यह दरगाह हमारे वतन की गंगा-जमुनी संस्कृति का प्रतीक है। हजरत ख्वाजा साहब का मुबारक पैगाम प्रेम, सेवा और आपसी भाईचारे को बढ़ावा देने का रहा है। यह रिवायत हमारे मुल्क का कीमती सन्तान है, जिसकी हिफाजत करना हम सबका फरीजा है। आइये हम सब मिलकर ख्वाजा साहब की बारगाह में हाथ उठाकर दुआ करें कि मुल्क के अन्दर अमन, शांति और खुशहाली हमेशा बरकरार रहे और अमन के दुश्मनों को तमाम साजिशें नाकाम हों। मुझे पूरा यकीन है कि दुआ के लिए उठे हुए हाथ खुदा के जात से कुबूलियत जरूर हासिल करेंगे। इस अवसर पर अजमेर

शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विजय जैन, पूर्व मंत्री नसीम अख्तर इंसाफ, महेंद्र सिंह रलावात, पारस पंच, नाथूराम सिनोदिया, शिव प्रकाश गुर्जर, हेमंत भाटी, कप्तान बाबोलिया, इनाफ अली, अवधेश पारीक, हरि सिंह गुर्जर, प्रताप यादव, गिरधर तेजवानी, शिव कुमार बंसल, आरिफ हुसैन, नरेश सत्यवाना, सुकेश काकरिया, अशोक बिंदल, श्याम प्रजापति, विपिन बेसिल, कुश महेंद्र सिंह रलावात, राज नारायण, अशोक, हमीद चौता, गजेंद्र सिंह रलावात, हितेश्वरी टाक, मनीष चौरसिया, रश्मि हिंगोराणी, सुनील धानका, मनीष सेठी, शक्ति सिंह रलावात सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

लैंड करते हुए तटरक्षक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ

पोरबंदर हवाई अड्डे पर हुई दुर्घटना में दो पायलट व एक एयरकू गोताखोर की मृत्यु

नयी दिल्ली, 05 जनवरी। भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) का एक एएलएच एम्के- हेलीकॉप्टर रविवार को गुजरात के पोरबंदर हवाई अड्डे के रनवे पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें तीन कर्मियों की मौत हो गई। रक्षा मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, यह दुर्घटना उस समय हुई जब दो पायलटों और एक एयरकू गोताखोर के साथ

आईसीजी हेलीकॉप्टर नियमित प्रशिक्षण उड़ान पर था। घटना के तुरंत बाद, चालक दल को पोरबंदर के सरकारी अस्पताल में स्थानांतरित किया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। घटना के कारणों की जांच बोर्ड ऑफ इन्वैस्टिगेशन द्वारा की जा रही है।

बयान के अनुसार, चालक दल के कमांडेंट (जेजी) सोमेश, डिप्टी कमांडेंट सुधीर कुमार यादव और मनीष प्रधान

■ दोपहर में रूटीन राउंड के बाद कोस्ट गार्ड हेलीकॉप्टर लैंडिंग के दौरान रनवे पर क्रैश हो गया। जोरदार धमाके की आवाज आस-पास के इलाकों में सुनी गई।

■ तीनों मृतकों का सेवा परम्यार्ओं एवं सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जायेगा। घटना के कारणों पर बोर्ड ऑफ इन्वैस्टिगेशन द्वारा जांच होगी।

नाविक के शवों का सेवा परंपराओं एवं सम्मान के अनुसार अंतिम संस्कार किया जाएगा।

पुलिस ने बताया कि कोस्ट गार्ड के हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचना मिली ही एयर एन्क्लेव में फायर ब्रिगेड और पोरबंदर फायर ब्रिगेड तुरंत मौके पर पहुंच गए और दमकल कर्मियों ने कड़ी मशक्कत के साथ आग पर काबू पाने की कोशिश की। पोरबंदर में तटरक्षक बल का मुख्यालय स्थित है

और हवाई अड्डे के पास तटरक्षक बल का एयर एन्क्लेव है। आज दोपहर रूटीन राउंड के बाद जब कोस्ट गार्ड का हेलीकॉप्टर लैंड कर रहा था तो अचानक दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसके बाद एक जोरदार धमाके की आवाज आसपास के इलाकों में सुनाई दी। हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद उसमें आग लग गई, जिससे पायलट समेत तीन लोगों की मौत हो गयी। पुलिस ने मामला दर्ज करके आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है।

यूनियन कार्बाइड का कचरा पीथमपुर में नहीं जलाया जाए

इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में पेश याचिका पर आज सुनवाई होगी

भोपाल, 05 जनवरी। मध्य प्रदेश के पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड का कचरा जलाने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल की गई है। याचिका में कचरे को भोपाल से पीथमपुर ले जाने और वहां इसे जलाने पर रोक लगाने की मांग की गई है। याचिका में कहा गया है कि यूनियन कार्बाइड के कचरे को भोपाल से पीथमपुर ले जाने का फैसला लेते समय पीथमपुर के लोगों से सलाह नहीं ली गई। पीथमपुर में रेडिएशन का खतरा हो सकता है। अगर वहां एसा

■ याचिका में कहा गया है कि कचरा जलाने से पीथमपुर में रेडिएशन का खतरा हो जायेगा और वहाँ इसके लिये उचित मैडिकल फैसिलिटी भी नहीं है।

होता है तो पीथमपुर में उचित मैडिकल फैसिलिटी मौजूद नहीं है। अह इस याचिका पर सुप्रीम कोर्ट कल सुनवाई करेगा। दरअसल, मध्य प्रदेश के पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री मुख्यमंत्री मोहन यादव ने लोगों से अफवाहों पर यकीन न करने की अपील की है और कहा है कि सरकार

जो कर रही है, वह सभी के हित में है। उन्होंने इशारों में कांग्रेस नेताओं पर निशाना भी साधा। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि 40 साल पहले जिनके कार्यकाल में गैस त्रासदी हुई, वही गलतफहमी फैलाने से आज भी बाज नहीं आ रहे हैं। अज्ञानता के आधार पर गलत बात फैलाई जा रही है, वोट की राजनीति के लिए कोई झूठी बात फैलाए तो मैं क्या कर सकता हूँ। अब इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की गई है, जिसपर सोमवार को सुनवाई होगी है।

‘राहुल गाँधी व तेजस्वी यादव युवाओं की लड़ाई का नेतृत्व करें’

प्रशांत किशोर ने कहा कि यह आंदोलन बिहार की खराब व्यवस्था के खिलाफ है

पटना, 5 जनवरी। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव से युवाओं की लड़ाई का नेतृत्व करने की अपील करते हुए कहा है कि वे यदि उनके साथ आते हैं तो वे उनके पीछे बैठकर आंदोलन का समर्थन करेंगे।

किशोर ने गांधी मैदान स्थित गांधी मूर्ति के नीचे अपने आमरण अनशन के चौथे दिन प्रेस वार्ता में कहा स्पष्ट रूप से कहा, यह आंदोलन किसी एक व्यक्ति का नहीं है, बल्कि यह बिहार की खराब व्यवस्था के खिलाफ है। मैं तमाम राजनीतिक पार्टियों से ये अपील करता हूँ कि चाहे वो तेजस्वी यादव हों, राहुल गांधी हों, या कोई और नेता, वे हमारे साथ आएं। मैं उनके पीछे बैठकर इस आंदोलन का समर्थन करूँगा। यदि युवा तय कर लें कि वे नेता

■ आमरण अनशन के चौथे दिन प्रशांत किशोर ने बताया कि आंदोलन अब 51 सदस्यीय युवा सत्याग्रह समिति की ओर से चलाया जायेगा। यह समिति बिहार की व्यवस्था में सुधार के लिये प्रतिबद्ध है।

इसका नेतृत्व करेंगे, तो मैं पीछे हटने के लिए तैयार हूँ।

किशोर ने कहा कि यदि प्रशासन उनकी गिरफ्तारी कर भी लेती है, तो भी ये सत्याग्रह जारी रहेगा। उन्होंने जानकारी दी कि अब यह आंदोलन

51 सदस्यीय युवा सत्याग्रह समिति की ओर से आगे बढ़ाया जाएगा। यह समिति बिहार की व्यवस्था में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, मैं समिति के साथ खड़ा हूँ, और उनकी मदद करूँगा। अब यह आंदोलन सिर्फ बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएस सी) के खिलाफ नहीं है, बल्कि बिहार की पूरी व्यवस्था के खिलाफ है।

प्रशांत किशोर ने कहा, हमारा संघर्ष एक युवा नेतृत्व वाली जन शक्ति के रूप में जारी रहेगा। सरकार चाहे कितनी भी ताकतवर क्यों न हो, जन बल से अधिक कोई बल नहीं है। इन युवाओं की कमिंटमेंट मेरी अपेक्षा से कहीं ज्यादा मजबूत है। उन्होंने बिहार के लोगों से आ न करने हुए कहा, यह लड़ाई सिर्फ बीपीएससी की नहीं, यह बिहार की व्यवस्था को सुधारने की है।

मोदी का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) कहा कि कुछ सप्ताह पहले उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के दूसरे चरण का उद्घाटन किया था। दिल्ली मेट्रो फेज-4 के जनकपुरी और कृष्णा पार्क के बीच शुरू हुए इस फेज के पहले खंड से पश्चिमी दिल्ली के कृष्णा पार्क, विकासपुरी, जनकपुरी के कुछ हिस्से आदि क्षेत्रों को लाभ मिलेगा। इसी तरह दिल्ली मेट्रो फेज-4 के 26.5 किलोमीटर लंबे रिटाला-कुंडली खंड के बन जाने पर यह दिल्ली के रिटाला को हरियाणा के नाथुपुर (कुंडली) से जोड़ेगा और इसका लाभ रोहिणी, बवाना, नरेला और कुंडली जैसे क्षेत्र के निवासियों को मिलेगा।

दक्षिण बस्तर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) उन्होंने चार नक्सलियों को मार गिराया साथ ही एके47, एसएलआर जैसे आर्टोमेटिक गन आदि हथियारों को जब्त किया। जाकारारी के मुताबिक इस मुठभेड़ में दत्तेबाड़ा डीआरजी के जवान प्रधान आरक्षक सुभाष काम शहीद हुए। इस मुठभेड़ पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साई ने पोस्ट शेयर किया है।

ओयो होटल में अविवाहित जोड़ों को कमरा नहीं मिलेगा

अपने संशोधित नियम में ओयो ने जोड़ों को शादी का वैध प्रमाण देना अनिवार्य बताया

नई दिल्ली, 05 जनवरी। होटल और ट्रेवल बुकिंग सेक्टर की दिग्गज कंपनी ओयो ने अविवाहित जोड़ों के लिए नियमों में संशोधन किया है। अब ओयो में अविवाहित जोड़ों को कमरा नहीं दिया जाएगा। इसके बाद अब पति-पत्नी ही होटल में कमरा ले सकेंगे। ओयो ने मेरठ से शुरूआत करते हुए भागीदार होटलों के लिए नई 'चैक-इन, नीति लागू की है। संशोधित नीति के मुताबिक, सभी जोड़ों को 'चैक-इन के वक्त अपने रिश्ते का वैध प्रमाण देने के लिए कहा जाएगा। इसमें ऑनलाइन बुकिंग भी शामिल है। कंपनी ने कहा कि ओयो ने अपने भागीदार होटलों को स्थानीय सामाजिक

■ ओयो कंपनी ने अभी कुछ शहरों में यह नीति लागू की है। शीघ्र ही अन्य शहरों में भी इसे लागू किया जायेगा।

में हुए बदलाव से परिचित लोगों ने कहा कि जमीनी प्रतिक्रिया के आधार पर कंपनी इसे और शहरों में विस्तारित कर सकती है। उन्होंने कहा, "ओयो को पहले भी, विशेष रूप से मेरठ में सामाजिक समूहों से इस मुद्दे को हल करने के लिए प्रतिक्रिया मिली थी। इसके अलावा, कुछ दूसरे शहरों के निवासियों ने भी अविवाहित जोड़ों को ओयो होटलों में चेक-इन करने की अनुमति न देने की मांग की है।

कश्मीर के कई क्षेत्रों में रविवार को फिर बर्फ गिरी

श्रीनगर, 05 जनवरी। गुलमर्ग और सोनमर्ग जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों सहित कश्मीर के अधिकांश हिस्सों में रविवार को एक बार फिर बर्फबारी हुई। अधिकारियों ने शीत जलवायु देते हुए बताया कि श्रीनगर और अन्य निचले इलाकों में बारिश हुई है। श्रीनगर में पूरे जम्मू-कश्मीर में व्यापक रूप से हल्की से मध्यम बारिश और बर्फबारी का पूर्वानुमान बताया है। रिपोर्टों के अनुसार, प्रसिद्ध स्की रिसॉर्ट गुलमर्ग, सोनमर्ग और कुपवाड़ा, बारामूला, तंगमर्ग, शोपियां, कुलगाम और पौर पंजाल पर्वत श्रृंखला सहित अन्य क्षेत्रों में भी बर्फबारी हुई है। स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार कई स्थानों पर बर्फबारी जारी है।

गुलमर्ग और सोनमर्ग में पर्यटकों और स्थानीय लोगों ने ताजा बर्फबारी का आनंद उठाया। टैफिक जाम से बचने के लिए गुलमर्ग की सड़कों पर बर्फ हटाने का अभियान भी शुरू किया गया है।